1

साझेदारी का सामान्य परिचय
(General Introduction of Partnership)

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात्, आप यह समझने योग्य हो जाते है:

- साझेदारी का अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, विशेषतायें व प्रकार
- साझेदारी संलेख का अर्थ, विषय–वस्तु, अभाव में लागू होने वाले नियम
- साझेदारों के पूँजी खाते, स्थिर परिवर्तनशील विधि से बनाना, अन्तर करना
- साझेदारों में लाभों का विभाजन तथा लाभ–हानि नियोजन खाता
- पूँजी तथा आहरणों पर विभिन्न स्थितियों के अन्तर्गत ब्याज का परिकलन व लेखा
- साझेदारी फर्म के बन्द हुए खातों का समायोजन
- साझेदार को न्यनूतम लाभ का आश्वासन या गारण्टी का समायोजन

साझेदारी का अर्थ और परिभाषा (Meaning & Definition of Partnership)

साझेदारी से सम्बंधित प्रावधान भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 में दिये गये है। भारतीय साझेदारी अधिनियम 1 अक्टूबर 1932 को लागू हुआ जो जम्मू कश्मीर को छोडकर सम्पूर्ण भारत पर लागू होता है। इस अधिनियम के लागू होने से पूर्व साझेदारी से संबंधित प्रावधान भारतीय संविदा (अनुबंध) अधिनियम 1872 में दिये गये थे।

साझेदारी का आशय व्यावसायिक संगठन के ऐसे स्वरूप से है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति स्वेच्छा से किसी वैधानिक व्यापार को चलाने के लिए सहमत होते है। व्यवसाय में पूँजी लगाते है, प्रबंधकीय योग्यता का सामूहिक प्रयोग करते है तथा लाभों को आपस में बांटते है।

सर फ्रेडरिक पालाक (Sir Fredrick pollock) के अनुसार "साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच का संबंध है जिन्होंने सबके द्वारा अथवा सबकी ओर से उनमें से किसी के द्वारा किये जाने वाले व्यापार के लाभों में हिस्सा बंटाने के लिए ठहराव किया है।"

भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 4 के अनुसार "साझेदारी उन व्यक्तियों के मध्य पारस्परिक संबंध है जो किसी ऐसे व्यवसाय के लाभों को बांटने के लिए सहमत हुए है जिसका संचालन उन सभी के द्वारा या उन सभी की ओर से किसी एक के द्वारा किया जाता है।" साझेदारी में जो व्यक्ति शामिल होते है व्यक्तिगत रूप से साझेदार कहलाते हैं और सामूहिक रूप से फर्म कहलाते है। जिस नाम से साझेदारी का व्यवसाय किया जाता है, उसे फर्म का नाम कहा जाता है।

साझेदारी की आवश्यकता (Need of Partnership)

सीमित पूँजी, सीमित प्रबंध, क्षमता व चातुर्य, अनिश्चित अस्तित्व आदि एकाकी व्यापार की कमियों को दूर करने के लिए साझेदारी का उद्भव हुआ है। पूँजी, कार्यकुशलता, अनुभव की पूर्ति के लिए साझेदारी की स्थापना की जाती है। वास्तव में यह विकेंद्रित साधनों का केंद्रीयकरण है जैसे कहीं पर पूँजी है तो कहीं पर प्रतिभा। संक्षेप में साझेदारी की आवश्यकता एकाकी व्यापार की कमियों को दूर करने के लिए हुई हैं।

साझेदारी की विशेषताएँ (Characteristics of Partnership)

साझेदारी में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं –

1. दो या दो से अधिक व्यक्ति का होना (Two or More than Two Persons) : साझेदारी की स्थापना के लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना आवश्यक है क्योंकि कोई भी अकेला व्यक्ति स्वयं का **1.** साझेदार नही हो सकता। साथ ही ऐसे व्यक्ति अनुबंध करने की क्षमता रखते हो । अतः भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872 के अनुसार एक अवयस्क, पागल व कानून द्वारा अयोग्य घोषित व्यक्ति फर्म में साझेदार के रूप में शामिल नहीं हो सकते है। इसी विशेषता के आधार पर यदि भविष्य में साझेदारों की संख्या घटकर एक रह जाये तो साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती है।

भारतीय साझेदारी अधिनियम में साझेदारों की अधिकतम संख्या का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है । कम्पनी अधिनियम की धारा 464 के अनुसार एक साझेदारी संस्था में साझेदारो की अधिकतम संख्या वह होगी जो निर्धारित की जायेगी, जो 100 से अधिक नहीं होगी। लेकिन कम्पनी (विविध) नियम 2014 के नियम 10 के अंतर्गत यह संख्या 50 तक सीमित कर दी गयी हैं।

2. साझेदारों के मध्य समझौता या अनुबंध होना (Agreement Among Partners): – साझेदारी का जन्म समझौते द्वारा होता है अतः साझेदारों के मध्य समझौता होना आवश्यक है । समझौता लिखित अथवा मौखिक हो सकता है लेकिन भविष्य में किसी भी विवाद से बचने के लिए लिखित समझौता उचित रहता है। भारतीय अनुंबध अधिनियम की धारा 5 के अनुसार

''साझेदारी का जन्म अनुबंध से होता है किसी स्थिति के कारण नही'' बिना ठहराव के साझेदारी का जन्म नहीं हो सकता है। केवल दो पक्षकारों द्वारा मिलकर कारोबार करने मात्र से वे साझेदार नही बन जाते हैं। इसी प्रकार साझेदारी का जन्म कानून के प्रभाव से तथा उत्तराधिकार से भी नही होता है । यह तो केवल ठहराव से ही उत्पन्न होता है।

3. लाभों का विभाजन (sharing of profits):– साझेदारी का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना व उसे साझेदारों के मध्य बांटना हैं। कोई भी संस्था जिसका उद्देश्य लाभ कमाना नही हो अर्थात परोपकार करना हो, कानूनी रूप से साझेदारी नहीं हो सकती है। साझेदार का लाभ में हिस्सा होना महत्वपूर्ण है, परन्तु हानि में हिस्सा होना आवश्यक नहीं है। जैसे अवयस्क साझेदार का केवल फर्म के लाभों में हिस्सा होता है हानियों में नही। विपरीत अनुंबध के अभाव में हानियों को भी लाभों के अनुपात में बांटा जाता है।

4. व्यवसाय का होना (carrying on a business) :– साझेदारी के गठन का उद्देश्य किसी वैध व्यवसाय को चलाना होना चाहिए। व्यवसाय शब्द में प्रत्येक व्यापार, धंधा व पेशा (Trade, Vocation & Profession) शामिल है। यदि किसी भी संस्था का गठन धार्मिक या सामूहिक कार्यो के लिए किया जाता है तब उसे साझेदारी नही माना जाता है ।

5. व्यवसाय का संचालन सभी के द्वारा या उन सभी की और से किसी एक द्वारा किया जा सकता है (Business carried on by all or any of them acting for all) :– कानूनी रूप से व्यवसाय के संचालन में सभी साझेदार भाग ले सकते हैं परन्तु व्यवसाय का संचालन उन सभी की सहमति से कोई भी साझेदार कर सकता है। क्योंकि प्रत्येक साझेदार फर्म का ऐजेन्ट भी होता है और स्वामी भी। ऐजेन्ट इसलिए क्योंकि वह अपने कार्यो सें अन्य साझेदारों को बाध्य कर सकता है और स्वामी इसलिए क्योंकि वह स्वयं अन्य साझेदारों के कार्यों से बाध्य होता हैं।

6. अधिनियम (Act) :– साझेदारी व्यवसाय भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 द्वारा संचालित होता है।

7. असीमित दायित्व (Unlimited liability) :– साझेदारी में प्रत्येक साझेदार का दायित्व असीमित होता है। अन्य शब्दों में साझेदार के समस्त दायित्व के लिए प्रत्येक साझेदार संयुक्त व पृथक दोनो प्रकार से उत्तरदायी होता है ।

8. पृथक अस्तित्व नहीं (No Separate Existence) :– साझेदारी फर्म का साझेदारों से पृथक अस्तित्व नहीं होता है। अस्तित्व अलग न होने से आशय यह है कि फर्म से संबंधित सभी अनुबंध फर्म पर लागू होने के साथ – साथ प्रत्येक साझेदार पर भी संयुक्त व व्यक्तिगत रूप से लागू होते है ।

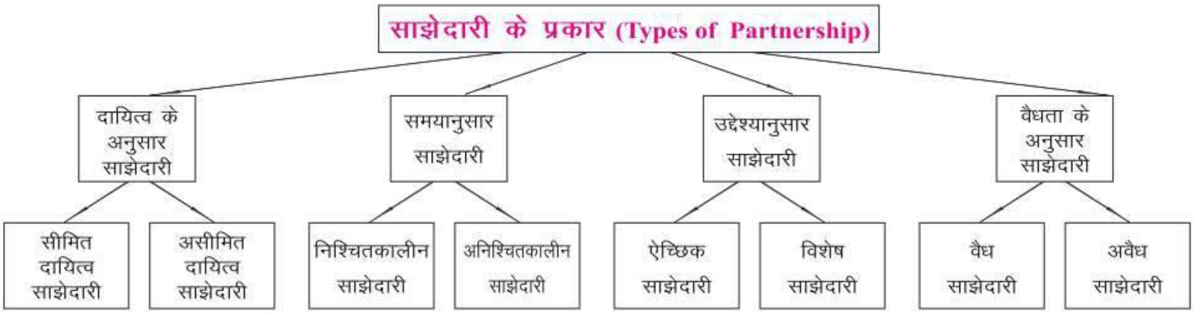

1. दायित्व के अनुसार साझेदारी:

(अ) सीमित दायित्व साझेदारी (Limited Liability Partnership) LLP- सीमित दायित्व साझेदारी अधिनियम 2008 के अन्तर्गत स्थापित एक निगम हैं। यह एक कृत्रिम व्यक्ति है, इसका पृथक वैधानिक अस्तित्व है तथा शाश्वत जीवन है, जिसकी सार्व–मुद्रा है जो सीमित दायित्व पर आधारित है, सीमित दायित्व साझेदारी में साझेदारों का दायित्व सीमित होता है। साझेदारों की निजी सम्पत्तियों पर साझेदारी फर्म का कोई अधिकार नहीं होता हैं।

(ब) असीमित दायित्व साझेदारी (Unlimited Liability Partnership) जिस साझेदारी में सभी साझेदारों का दायित्व असीमित होता है अर्थात जब फर्म के दायित्वों को चुकाने के लिए सभी साझेदार सयुंक्त व व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होते है तो ऐसी साझेदारी असीमित दायित्व साझेदारी कहलाती हैं।

2. समयानुसार साझेदारी (Partnership According to Time)

(अ) निश्चितकालीन साझेदारी (Fixed Time Partnership)

ऐसी साझेदारी जिसकी स्थापना एक निश्चित समय के लिए की गई हो, निश्चितकालीन साझेदारी कहलाती हैं तथा उस समय के समाप्त होते ही साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

(ब) अनिश्चितकालीन साझेदारी (Non Fixed Time Partnership)

ऐसी साझेदारी जिसकी स्थापना निश्चित समय के लिए नहीं की जाती अनिश्चितकालीन साझेदारी कहलाती हैं।

3. उद्देश्यानुसार साझेदारी (Partnership according to objects)

(अ) ऐच्छिक साझेदारी (Partnership at will)

यदि सभी साझेदार निश्चित अवधि की साझेदारी को अवधि समाप्त होने के बाद भी जारी रखना चाहते है तो वह साझेदारी ऐच्छिक साझेदारी बन जाती हैं।

(ब) विशेष साझेदारी (Particular Partnership)

किसी विशेष कार्य अथवा उद्देश्य के लिए स्थापित साझेदारी विशेष साझेदारी कहलाती हैं। उद्देश्य के पूर्ण होने पर ऐसी साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

4. वैधता के अनुसार साझेदारी (Partnership According to Legality)

(अ) वैध साझेदारी (Legal Partnership) देश के प्रचलित नियमों से अनुसार स्थापित साझेदारी वैध साझेदारी कहलाती है।

(ब) अवैध साझेदारी (Illegal Partnership) यदि किसी साझेदारी की स्थापना प्रचलित नियमों के अनुसार न हो तो ऐसी साझेदारी अवैध साझेदारी कहलाती है। निम्न दशाओं में एक साझेदारी अवैध कहलाती है।

(1) जबकि साझेदारी की स्थापना का उद्देश्य गैर कानूनी हो।
(2) जबकि साझेदारों की संख्या दो से कम हो जाये व अधिकतम संख्या 50 से अधिक हो जाये।
(3) जबकि साझेदारी का व्यापार लोक नीति या अंतर्राष्ट्रीय नीति के विरूद्ध हो।
(4) जबकि किसी साझेदार में शत्रु राष्ट्र का नागरिक बना दिया जाये।

साझेदारी संलेख में सम्मिलित होने वाली बातें **(Contents of Partnership Deed)** : साझेदारों के मध्य लिखित समझौता साझेदारी संलेख कहलाता है। साझेदारी संलेख में निम्न बातों का उल्लेख किया जाता है।

(1) फर्म का नाम व पता।
(2) साझेदारों के नाम व पते।
(3) साझेदारी व्यवसाय की प्रकृति व कार्यक्षेत्र।
(4) लाभ विभाजन अनुपात।
(5) साझेदारों की पूँजी।
(6) पूँजी पर ब्याज के संबंध में प्रावधान।
(7) आहरण की राशि।
(8) आहरण पर ब्याज के संबंध में प्रावधान।
(9) फर्म की लेखा पुस्तके रखने की विधि।
(10) साझेदारों को देय वेतन, बोनस व कमीशन आदि।
(11) खातों का अंकेक्षण
(12) साझेदारी की अवधि
(14) साझेदारों के ऋण व उस पर ब्याज की दर
(14) पूँजी खाते रखने की विधि
(15) साझेदारों के अधिकार, कर्तव्य व दायित्व
(16) विवादों के निपटारे की विधि
(17) नये साझेदार के प्रवेश पर प्रावधान
(18) नये साझेदार के प्रवेश, अवकाश ग्रहण करने, मृत्यु होने व लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर ख्याति का मूल्यांकन व लेखा।
(19) किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने या मृत्यु पर हिसाब के निपटारे की विधि।
(20) फर्म के समापन की विधि व परिस्थितियां
(21) फर्म के समापन पर हिसाब के निपटारे की विधि
(22) किसी साझेदार के दिवालिया होने पर गॉर्नर v/s मर्रे नियम का प्रयोग

साझेदारी संलेख के अभाव में लागू होने वाले नियम (Rules applicable in absence of Partnership Deed)

1. लाभ विभाजन अनुपात– साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन समान अनुपात (बराबर 2) में होगा।
2. पूँजी पर ब्याज– साझेदारों को पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जायेगा।
3. आहरण पर ब्याज– साझेदारों द्वारा किये गये आहरण पर फर्म ब्याज नहीं लेगी।
4. साझेदारों को पारिश्रमिक– साझेदारों को पारिश्रमिक (वेतन, कमीशन) नहीं दिया जायेगा।
5. साझेदारों के ऋणो पर ब्याज– 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।
6. प्रत्येक साझेदार को व्यापार संचालन व प्रबंध में हिस्सा लेने का अधिकार होगा।
7. प्रत्येक साझेदार को फर्म की पुस्तकों को देखने, निरीक्षण करने व उनकी प्रतिलिपि लेने का अधिकार होगा।

साझेदारों के पूँजी खाते (Capital A/c of Partners)

साझेदारों के पूँजी खाते बनाने की दो विधियां हैं

पूँजी खाते (Capital Accounts)

स्थिर (अपरिवर्तनशील) पूँजी खाता विधि
Fixed Capital A/c Method

- **साझेदारों के पूँजी खाते** / **Partners Capital A/c**
- **साझेदारों के चालू खाते** / **Partners Current A/c**

परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि
Fluctuating Capital A/c Method

- **साझेदारों के पूँजी खाता** / **Partners Capital A/c**

साझेदारों के पूँजी खाते (Partners Capital Accouts) –

1. स्थिर पूंजी खाता विधि–जब सभी साझेदार यह निश्चित कर लेते है कि उनकी पूँजी में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा, तो ऐसी दशा में साझेदारों के पूँजी खाते स्थायी पूँजी खाते कहलाते हैं स्थायी पूंजी खाता विधि में साझेदारों के पूँजी से सम्बन्धित दो खाते खोले जाते है।

1. साझेदारों के पूँजी खाते **2.** साझेदारों के चालू खाते

1.साझेदारो के पूँजी खाते – इस खाते में केवल साझेदार द्वारा फर्म में लगायी गयी पूँजी का ही लेखा किया जाता हैं पूँजी खाते का शेष प्रतिवर्ष एक समान रहता है उस विशेष परिस्थिति को छोड़कर जब साझेदार अतिरिक्त पूँजी लगाये व स्थायी रुप से पूँजी निकाले अन्यथा साझेदारों के पूँजी खातों के प्रारम्भिक व अंतिम शेषों में कोई परिवर्तन नहीं होता है इस कारण से इस खाते का शेष सदैव क्रेडिट होता हैं।

2.साझेदारों के चालू खाते –साझेदारों के पूँजी लगाने व निकालने के अतिरिक्त अन्य सभी मदों का लेखा इस खाते में करते हैं। इस खाते के क्रेडिट पक्ष पर साझेदारों का वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज व लाभों में हिस्से का लेखा किया जाता है। इस खाते के डेबिट पक्ष पर साझेदारों के आहरण, आहरण पर ब्याज व हानि में हिस्से का लेखा किया जाता हैं। इस खाते का शेष डेबिट अथवा क्रेडिट हो सकता हैं।

Format

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B₹
To Cash/Bank A/c	xx	xx	By Balance b/d	xx	xx
(Permanent withdraw of Capital)			By Cash/Bank	xx	xx
To Balance c/d	xx	xx	(Additional Capital introduced)		
	xx	**xx**		**xx**	**xx**

Dr. **Partner's Current A/c** **Cr.**

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Balance b/d	xx	xx	By Balance b/d	xx	xx
To Drawings	xx	xx	By interest on Capital	xx	xx
To interest on Drawings	xx	xx	By Salary	xx	xx
To P&L Appropriation A/c (Loss)	xx	xx	By Commission	xx	xx
To Balance c/d	xx	xx	By P & L Appropriation A/c	xx	xx
	xx	**xx**	(Profit)	**xx**	**xx**

नोटः यदि प्रश्न में चिट्ठे के अंतर्गत साझेदारों के चालू खातों का शेष दिया जाता है तो इसका आशय यह है कि साझेदारों के पूँजी खाते स्थिर पूँजी खाता विधि से रखे जाते हैं।

2..परिवर्तनशील पूंजी खाता विधिः–जब साझेदारों के पूँजी खातों के शेष प्रतिवर्ष बदलते रहते हैं तो उन्हें परिवर्तनशील पूँजी खाते कहते हैं। पूँजी तथा पूँजी को बढ़ाने वाली मदें (साझेदारों का वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज, लाभ में हिस्सा) क्रेडिट पक्ष में तथा पूँजी को घटाने वाली मदें (आहरण, आहरण पर ब्याज, हानि में हिस्सा) डेबिट पक्ष में दिखाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप पूँजी खाते के प्रारम्भिक व अंतिम शेष हमेशा परिवर्तित होते रहते हैं।

नोट : प्रश्न में स्पष्ट सूचना के अभाव में साझेदारों के पूँजी खाते परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि के अनुसार ही रखे जाते हैं।

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Balance b/d	xx	xx	By Balance b/d	xx	xx
To Drawings	xx	xx	By Cash / Bank A/c	xx	xx
To Cash / Bank	xx	xx	(Additional Capital introduced)		
(Permanent withdrawl of Capital)					
To Interest on Drawing	xx	xx	By Interest on Capital	xx	xx
To P&L Appropriation A/c	xx	xx	By Salary	xx	xx
(Loss)			By Commission	xx	xx
To Balance c/d	xx	xx	By P & L Appropriation A/c	xx	xx
	xx	**xx**	(Profit)	**xx**	**xx**

नोटः अंतिम शेष विपरीत पक्ष में भी आ सकता है।

स्थिर व परिवर्तनशील पूँजी खाता विधियों में अंतर

Difference between Fixed Capital A/c & Fluctuating Capital A/c Method

अन्तर का आधार	स्थिर पूँजी खाता विधि	परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि
1. खातों की संख्या	इस विधि में प्रत्येक साझेदार के दो खाते खोले जाते हैं (i) पूँजी खाता (ii) चालू खाता	इसमें प्रत्येक साझेदार के लिए केवल एक खाता है। अर्थात् पूँजी खाता ही बनाया जाता हैं।
2. पूँजी खाते के शेष में परिवर्तन	इसमें पूँजी खाते का शेष सामान्यतः अपरिवर्तित रहता हैं। जब तक कि अतिरिक्त पूँजी न लगायी जाये अथवा स्थायी रूप से पूँजी वापस न निकाली जाये।	इसमे पूँजी खाते का शेष प्रतिवर्ष बदलता रहता

3. पूँजी खातों का शेष	पूँजी खाते का शेष सदैव क्रेडिट होता है।	समायोजन लेखों के कारण पूँजी खाते का शेष क्रेडिट अथवा डेबिट हो सकता है।
4. व्यवहारों का लेखांकन	इसमें केवल पूँजी का लेखा किया जाता है। फर्म व साझेदारों के मध्य होने वाले पूँजी के अतिरिक्त अन्य व्यवहारों का लेखा चालू खाते में होता है।	इसमें फर्म व साझेदारों के मध्य होने वाले पूँजी सहित सभी व्यवहारों का लेखा पूँजी खातों में होता है।

साझेदारों के मध्य लाभों का बँटवारा (Distribution of Profits among the Partners)

साझेदारी फर्म की दशा में लाभ– हानि खाते द्वारा प्रकट शुद्ध लाभ / शुद्ध हानि का साझेदारी संलेख के अनुसार साझेदारों में विभाजन करने के लिए लाभ–हानि नियोजन खाता (P&L Appropiation A/c) बनाया जाता है।

लाभ–हानि नियोजन खाता : इस खाते में साझेदारी संलेख के अनुसार लाभों का नियोजन किया जाता है इसलिए इसे लाभ –हानि नियोजन खाता कहते है। यह एक नाममात्र का खाता होता हैं। और इसे लाभ–हानि खाते की तरह ही बनाया जाता है। यह खाता लाभ– हानि खाते का ही विस्तार है। इस खाते के क्रेडिट पक्ष पर चालू वर्ष का शुद्ध लाभ व आहरण पर ब्याज का लेखा करते है। इस खाते के डेबिट पक्ष पर चालू वर्ष की शुद्ध हानि, साझेदारी की पूँजी पर ब्याज, साझेदारी का पारिश्रमिक (वेतन, कमीशन आदि) संचय में हस्तान्तरण का लेखा करते है। दोनों पक्षों का अन्तर विभाजन योग्य लाभ–हानि होता है जिसे साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में बांटा जाता है।

Format

Pofit & Loss Appropriation Account

For the year ended............................

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To P&L A/c (Net Loss for the year)			By P&L A/c (Net profit for the year)		
To Interest on Capital			By Interest on Drawings		
A	xx		A	xx	xx
B	xx	xx	B	xx	
To Partner's Salary			By Partner's Capital A/c / Current A/c (share of Loss)		
A	xx		A	xx	xx
B	xx	xx	B	xx	
To Partner's Commission			(Balancing Figure)		
A	xx				
B	xx				
To Reserve A/c (Transfer)		xx			
To Partner's Capital A/c / Current A/c (share of Profit) (Balancing Figure)		xx			
A	xx				
B	xx				
		xx			xx

नोटः 1. यदि प्रश्न में किसी मद को चार्ज करने के पश्चात् (After charging) लाभ दिये गये है तो उस मद का लेखा लाभ–हानि नियोजन खाते में नहीं करते है। लेकिन साझेदार के पूँजी खाते या चालू खाते में उस मद का लेखा किया जायेगा।

2. यदि प्रश्न में किसी मद को चार्ज करने के पूर्व के लाभ (Before charging) लाभ दिये गये है तो उस मद का लेखा लाभ हानि नियोजन खाते व साझेदार के पूँजी खाते/चालू खाते में किया जाता हैं।

3. निम्न मदें लाभों पर प्रभार (charge on Profit) मानी जाती हैं अतः इन मदों को लाभ–हानि खाते में लिखा जाता है। (न कि लाभ–हानि नियोजन खाते में) मैनेजर कमीशन, साझेदारों के ऋण पर ब्याज व उस भवन का किराया जिसमें फर्म का व्यापार चलाया जाता हैं। **4.** यदि लेखे स्थिर पूँजी खाता विधि से बनाये जाते है तो पूँजी के अतिरिक्त अन्य सभी मदों का लेखा साझेदारों के चालू खातों के माध्यम से होगा।

जर्नल प्रविष्टियाँ (Journal Entries)

लाभ–हानि नियोजन खाते के सम्बन्ध में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैः

	लेन–देन (Transactions)	लेखांकन प्रविष्टियाँ (Accounting Entries)
1)	पूँजी पर ब्याज के लिए–	Interest on Capital A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being interest allowed on capital)

2)	ब्याज की रकम को लाभ–हानि नियोजन खाते में हस्तान्तरित करने के लिए–	Profit & Loss Appropiation A/c Dr. To Interest on Capital A/c (Being transfer of interest to P/L App. A/c)
	प्रविष्टि सं. 1 और 2 को मिलाकर एक प्रविष्टि की जा सकती है–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being interest on capital allowed to partners)
3)	आहरण पर ब्याज के लिए–	Partner's Capital A/c Dr. To Interest on Drawings A/c (Being interest on drawings transferred to Capital A/c)
4)	आहरण पर ब्याज को लाभ–हानि नियोजन खाते में हस्तान्तरित करने के लिए–	Interest on Drawings A/c Dr. To Profit & Loss Appropriation A/c (Being transfer of interest on drawings to P/L Appropriation A/c)
5)	प्रविष्टि सं. 3 और 4 को मिलाकर एक प्रविष्टि की जा सकती है–	Partner's Capital A/c Dr. To Profit & Loss Appropriation A/c (Being interest on drawings charged)
6)	साझेदारों को दिय गये वेतन/कमीशन के लिए–	Partner's Salary/Commission A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being Partner's Capital A/c credited with salary……..)
7)	साझेदारों को दिय गये वेतन/कमीशन को लाभ–हानि नियोजन खाते में हस्तान्तरित करने के लिए–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Partner's Salary A/c To Partner's Commission A/c (Being transfer of partner's salary/commission to P/L Appropriation A/c)
8)	संचय खाते में हस्तान्तरण के लिए–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Reserve/Reserve Fund A/c (Being transfer of profit to Reserve A/c)
9)	शुद्ध लाभ बांटने के लिए–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being profit distributed among/between partners)
10)	शुद्ध हानि को बांटने के लिए–	Partner's Capital A/c Dr. To Profit and Loss Appropriation A/c (Being Partner's Capital A/c debited with loss on P/L Appropriation A/c)

नोटः (1) यदि साझेदारों के पूँजी खाते स्थिर विधि से रखे गये है, तो साझेदारों के पूँजी खातों (Partners capital A/c) के स्थान पर साझेदारों के चालू खातों (Partners current A/c) का प्रयोग किया जायेगा।

उदाहरण 1:– अजय तथा विजय ने 1 अप्रेल 2016 को साझेदारी व्यवसाय शुरू किया। उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 2,00,000 तथा ₹ 3,00,000 थी।

साझेदारी संलेख में निम्न बातों का वर्णन हैः

(i) पूँजी पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जाएगा। **(ii)** अजय को ₹ 2,000 प्रतिमास तथा विजय को ₹ 36,000 वार्षिक वेतन दिया जाएगा। **(iii)** आहरण पर ब्याज अजय से ₹ 2,000 तथा विजय से ₹ 3,000 वसूल किया जाएगा। (iv) लाभों को 3:2 के अनुपात में विभाजित किया जाएगा। **(v)** वर्ष के दौरान अजय और विजय के आहरण क्रमशः ₹ 30,000 तथा ₹ 40,000 थे। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उपरोक्त समायोजन करने से पहले फर्म को ₹ 2,45,000 का लाभ हुआ। लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए।

Ajay and Vijay started a partnership business on 1st April, 2016 their capital contributions were ₹ 2,00,000 and 3,00,000 respectively, The partnership deed provided:

(i) Interest on capital at 10% p.a.**(ii)** Ajay to get a salary of ₹ 2000 p.m. and Vijay ₹ 36000 p.a.**(iii)** Interest on drawing amounted ₹ 2000 for Ajay and ₹ 3000 for Vijay. **(iv)** Profits are to be shared in the ratio of 3:2 **(v)** During the year drawing of Ajay and Vijay amounted to ₹ 30000 and ₹ 40000 respectively. The profits for the year ended 31st March 2017 before making above appropriations ₹ 2,45,000. Prepare Profit and Loss Appropriation Account.

हलः

Profit and Loss Appropriation A/c

Dr. *For the year ending 31st March, 2016* **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital:			By Profit before Adjustments		2,45,000
Ajay	20, 000		By Interest on Drawings:		
Vijay	30, 000	50, 000	Ajay	2,000	
To Partner's Salaries:			Vijay	3,000	5,000
Ajay	24, 000				
Vijay	36, 000	60, 000			
To Partner's Capital:					
Ajay	84, 000				
Vijay	56, 000	1,40,000			
		2,50,000			**2,50,000**

उदाहरण 2: K और R 3:2 अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार थे, साझेदारों के मध्य निम्न शर्तें तय हुई – (1) पूँजी पर ब्याज 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से (2) आहरण पर ब्याज 5 प्रतिशत वार्षिक की दर से (3) व्यापार को संचालित करने हेतु K को वेतन ₹ 5000 प्रति माह । 31-03-2017 को समाप्त होने वाले लेखा वर्ष के लिए निम्न सूचनाएं उपलब्ध है:

1-4-2016 को K की पूँजी ₹ 2,00,000 1-4-2016 को R की पूँजी ₹ 1,20,000

1-4-2016 को K का चालू खाता ₹ 1,2,000 (Cr.) 1-4-2016 को R का चालू खाता ₹ 4,000 (Dr.)

K द्वारा 1-10-2016 को अतिरिक्त पूँजी लगाई गई ₹ 80,000

वर्ष के दौरान आहरण –K ₹ 20,000, वर्ष के दौरान आहरण –R ₹ 20,000 वर्ष के लाभ ₹ 1,34,000

जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए तथा लाभ–हानि नियोजन खाता बनाईये। पूँजी खाते भी बनाईये यह मानते हुए कि स्थिर पूँजी खाता विधि अपनाई जाती हैं।

K and R were partners sharing profits in the ratio of 3:2. Following terms were agreed upon between the partners.

(1) Interest on Capital @ 10% per annum (2) Interest on drawings @ 5% per annum. (3) Salary to K for conducting business of the firm ₹5000 per month. Following informations are available for the accounting year ending 31st March, 2017

Capital of K on 01.04.2016	**₹ 2,00,000**	Capital of Ron 01.04.2016	**₹ 1,20,000**
Current Account of K on 01.04.2016	**₹ 12,000 (Cr.)**	Current Account of Ron 01.04.2016	**₹ 4,000 (Dr.)**
Additional Capital by K on 01.10.2016	**₹ 80,000**	Drawings during the year by K	**₹ 20,000**
Drawings during the year by R	**₹ 20,000**	Profit for the year`	**₹ 1,34,000**

Pass journal entries, prepare Profit and Loss Appropriation Account and show Capital Accounts of Partners assuming capital are fixed.

हल :

Journal

Particulars		L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
Bank A/c	Dr.		80,000	
To K's Capital A/c				80,000
(Additional capital contributed)				
K's Drawings A/c	Dr.		20,000	
R's Drawings A/c	Dr.		20,000	
To Bank				40,000
(Drawing Made)				
Interest on Capital A/c	Dr.		36,000	
To K's Current A/c				24,000
To R's Current A/c				12,000
(Interest charged)				

K's Current A/c	Dr.		1,000	
R's Current A/c	Dr.		1,000	
To Interest on Drawings				2,000
(Interest charged on Drawings)				
K's Current A/c	Dr.		20,000	
To K's Drawings A/c				20,000
(Transfer Drawings to Partner's Current Accounts)				
R's Current A/c	Dr.		20,000	
To R's Drawings A/c				20,000
(Transfer Drawings to Partner's Current Accounts)				
K's Salary A/c	Dr.		60,000	
To K's Current A/c				60,000
(Salary payable to K)				
Profit and Loss A/c	Dr.		1,34,000	
To Profit and Loss Appropriation A/c				1,34,000
(Net Profit transferred to Profit and Loss Appropriation A/c)				
Profit and Loss Appropriation A/c	Dr.		96,000	
To Interest on Capital A/c				36,000
To K's Salary A/c				60,000
(Interest on Capital and salary transferrred to Profit and Loss Appropriation A/c)				
Interest on Drawings A/c	Dr.		2,000	
To Profit and Loss Appropriation A/c				2,000
(Interest on Drawings transferred)				
Profit and Loss Appropriation A/c	Dr.		40,000	
To K's Current A/c				24,000
To Rs Current A/c				16,000
(Balance of P & L Appropriation Account Transferred to Partners Current Account)				

Profit and Loss Appropriation A/c for the year ended 31st March 2017

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital A/c			By Profit & Loss A/c (Net Profit)		1,34,000
K	24,000		By Interest on Drawings A/c		
R	12,000	36,000			
To K's Salary A/c		60,000	K	1,000	
To Profit Transferred to Current A/c			R	1,000	2,000
To K	24,000				
To R	16,000	40,000			
		1,36,000			1,36,000

Partner's Capital Account

Date	Particulars	K ₹	R ₹	Date	Particulars	K ₹	R ₹
2017				2016			
Mar.,31	To Balance c/d	2,80,000	1,20,000	Apr.,01	By Balance b/d	2,00,000	1,20,000
				Oct.,01	By Bank A/c	80,000	
		2,80,000	1,20,000			2,80,000	1,20,000

Partner's Current A/c

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	K ₹	R ₹	Date	Particulars	K ₹	R ₹
2016				2016			
Apr.,1	To Balance b/d		4,000	Apr., 01	By Balance b/d	12,000	--
2017				2017			
Mar.,31	To Drawings A/c	20,000	20,000	Mar.,31	By Int. on capital A/c	24,000	12,000
Mar.,31	To Interest on			Mar.,31	By Salary A/c	60,000	--

	Drawings A/c	1,000	1,000	Mar.,31	By Profit & Loss Appropriation A/c (Share of Profit)	24,000	16,000
Mar,31	To Balance c/d	99,000	3,000				
		1,20,000	**28,000**			**1,20,000**	**28,000**

साझेदारों की पूँजी पर ब्याज
Interest on Partner's Capital

साझेदारी संलेख में स्पष्टतः उल्लेख होने पर ही पूँजी पर ब्याज दिया जाता है। पूँजी पर ब्याज समय के आधार पर प्रारम्भिक पूँजी पर लगाया जाता है। यदि वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी लगाई जाती हैं तो उस पर उसकी समय अवधि के अनुसार ब्याज की गणना की जायेगी। यदि अन्तिम पूँजी दी गयी हो तो प्रारम्भिक पूँजी की गणना निम्न प्रकार से की जायेगी।

	अन्तिम पूँजी (Capital at the end)	xxx
Add:	आहरण (Drawings)	xxx
Less:	अतिरिक्त पूँजी (Additional Capital)	xxx
Less	चालू वर्ष का लाभ (Current year Profit)	xxx
	प्रारम्भिक पूँजी Opening Capital)	xxx

पूँजी पर ब्याज = $\frac{\text{पूँजी की राशि x दर x अवधि}}{100 \times 12}$, Interest on Capital= $\frac{\text{Amount of Capital x Rate x Period}}{100 \times 12}$

यदि साझेदारों द्वारा वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी लगायी गयी है या पूँजी निकाली गयी है तो पूँजी पर ब्याज की गणना गुणनफल विधि से की जा सकती हैं।

Interest on Capital = $\frac{\text{Total of Products x Rate}}{100 \times 12}$, पूँजी पर ब्याज = $\frac{\text{गुणनफलों का योग x दर}}{100 \times 12}$

नोट –: यदि पूँजी स्थिर है तो ब्याज की गणना स्थिर पूँजी पर की जायेगी।

पूँजी पर ब्याज की गणना सम्बन्धी प्रावधान–:

स्थिति (Situation)	प्रावधान (Provision)
I. जब साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज देने के बारे में कोई उल्लेख न हो।	ऐसी दशा में पूँजी पर कोई ब्याज नहीं दिया जायेगा।
II. जबकि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज देने का उल्लेख तो है किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि पूँजी पर ब्याज लाभों पर प्रभार (Charge on Profits) माना जायेगा या लाभों का नियोजन माना जायेगा।	इस स्थिति में पूँजी पर ब्याज तभी दिया जायेगा जबकि फर्म में लाभ हो। इसमें निम्न तीन परिस्थितियां हो सकती है– **i.** हानि की दशा में : पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जायेगा **ii.** यदि फर्म के लाभ (ब्याज देने से पूर्व) ब्याज के बराबर है अथवा ब्याज से अधिक है : पूँजी पर पूरा ब्याज दिया जायेगा। **iii.** यदि फर्म का लाभ (ब्याज देने से पूर्व) ब्याज से कम होः इस दशा में लाभों को पूँजी पर ब्याज के अनुपात में बांट लिया जायेगा।
III. जबकि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज को लाभों पर प्रभार मानने का उल्लेख हो	इस स्थिति में फर्म को चाहे लाभ हो अथवा हानि पूँजी पर ब्याज ब्याज दिया जायेगा व लेखा लाभ–हानि खाते में Dr. में होगा।

उदाहरण 3: X और Y साझेदार है, जिनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2 है तथा पूँजी क्रमशः ₹ 2,00,000 तथा ₹ 1,00,000 है। निम्न दशाओं में लाभ का विभाजन दिखाइए: –

(1) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के सम्बन्ध में कोई प्रावधान नहीं है तथा वर्ष के लाभ ₹ 60,000 है।
(2) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष की हानि ₹ 60,000 है।
(3) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष के लाभ ₹ 60,000 है।
(4) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष के लाभ ₹ 18,000 है।
(5) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष के लाभ ₹ 18,000 है। पूँजी पर ब्याज को लाभों का प्रभार माना गया है। केवल पांचवीं दशा में।

X and Y are partners sharing the profits and lossed in the ratio of 3 : 2 with capitals of ₹ 2,00,000 and ₹ 1,00,000 respectively. Show the distribution of profits in each of the following alternative cases:

(1) If the partnership deed is silent as to the Interest on Capital and the profits for the year are ₹ 60,000.
(2) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the losses for the year are ₹ 60,000.
(3) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the profits for the year are ₹ 60,000.

(4) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the profits for the year are ₹ 18,000.
(5) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the profits for the year are ₹ 18,000. Interest on Capital is charged on Profit. in (5) Conditions only.

हल :

(1) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partner's Capital (Profit) X 36,000 Y 24,000	60,000	By Profit & Loss A/c	60,000
	60,000		60,000

(2) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To P&L A/c (Loss)	60,000	By Partner's Capital A/c X 36,000 Y 24,000	60,000
	60,000		60,000

नोटः पूँजी पर ब्याज लाभों में से ही दिया जाता है। हानि होने के कारण पूँजी पर ब्याज नहीं दिया गया है।

(3) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital X 20,000 Y 10,000	30,000	By P&L A/c	60,000
To Partner's Capital A/c X 18,000 Y 12,000	30,000		
	60,000		60,000

(4) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital A/c X 18,000 x $\frac{2}{3}$	12,000	By P&L A/c	18,000
Y 18,000 x $\frac{1}{3}$	6,000		
	18,000		18,000

नोटः कुल लाभ को साझेदारों के मध्य देय ब्याज के अनुपात में बांटा गया है।

(5) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital X 20,000 Y 10,000	30,000	By Profit for the year	18,000
		By Partner's Capital A/c X 12,000 x $\frac{3}{5}$	7,200
		Y 12,000 x $\frac{2}{5}$	4,800
	30,000		**30,000**

नोटः पूँजी पर ब्याज लाभों का प्रभार माना गया है। अतः लाभ–हानि खाते में पूँजी पर ब्याज दिखाया गया है।

उदाहरण : 4 राम, श्याम तथा मोहन ने साझेदारी में एक व्यवसाय प्रारम्भ किया, जिसमें राम ने पूरे वर्ष के लिए ₹ 1,00,000 लगाये, श्याम ने प्रारम्भ में ₹ 50,000 लगाए और 3 माह के अन्त में इस राशि को ₹ 60,000 तक बढ़ाया तथा 8 माह के अन्त में ₹ 5,000 निकाले। मोहन ने प्रारम्भ में ₹ 70,000 लगाए और 4 माह बाद ₹ 20,000 निकाले। फर्म का वर्ष भर का लाभ ₹ 5,10,000 है। साझेदारों में वर्ष भर में उनकी पूँजी के आधार पर लाभ का विभाजन कीजिए।

हल : Calculation the ratio of effective Capital Employed during the year

Ram:	₹ 1,00,000	for	12 months	₹ 12,00,000
Shyam:	₹ 50,000	for	3 months	₹ 1,50,000
	₹ 60,000	for	5 months	₹ 3,00,000
	₹ 55,000	for	4 months	₹ 2,20,000
				₹ 6,70,000
Mohan:	₹ 70,000	for	4 months	₹ 2,80,000
	₹ 50,000	for	8 months	₹ 4,00,000
				₹ 6,80,000

Capital ratio = 120:67:68

Dr. **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partner's Capital		By Net Profit	5,10,000
Ram $\frac{5,10,000 \times 120}{255}$	2,40,000		
Shyam $\frac{5,10,000 \times 67}{255}$	1,34,000		
Mohan $\frac{5,10,000 \times 68}{255}$	1,36,000		
	5,10,000		5,10,000

आहरण पर ब्याज
(Interest on Drawings)

साझेदारों द्वारा फर्म से अपने निजी प्रयोग के लिए निकाली गयी नकद राशि या वस्तुएँ आहरण कहलाती है। साझेदारी संलेख में उल्लेख होने पर साझेदारों द्वारा किये गये आहरणों पर ब्याज वसूल किया जाता है। आहरण पर ब्याज फर्म की आय होती है।

आहरण पर ब्याज की गणना करने की विधियाँ
(Methods of calculation of Interest on Drawings)

- जबकि विभिन्न तिथियों पर असमान राशि आहरित की गयी हो
  - सरल विधि Simple Methods
  - गुणनफल विधि Product Methods
- जबकि नियमित अन्तराल पर समान राशि आहरित की गयी हो
  - औसत अवधि विधि
    - मासिक आधार पर आहरण
    - त्रैमासिक आधार पर आहरण

I जबकि विभिन्न तिथियों पर असमान राशि आहरित की गयी हो:

(1) सरल विधि– इस विधि में प्रत्येक आहरण की राशि पर दी गयी ब्याज दर से आहरण की तिथि से अंतिम खाते बनाने की तिथि तक की अवधि का ब्याज निकाला जाता है।

$$\text{ब्याज} = \frac{\text{आहरण की राशि}}{} \times \frac{\text{ब्याज की दर}}{100} \times \frac{\text{महीने}}{12} \text{ or } \frac{\text{दिनों की संख्या}}{365}$$

$$\text{Interest} = \frac{\text{Amount withdrawn}}{} \times \frac{\text{Rate of Interest}}{100} \times \frac{\text{months}}{12} \text{ or } \frac{\text{days}}{365}$$

(2) गुणनफल विधि – इस विधि में निम्नांकित तालिका बनाकर गणना की जाती है

आहरण की तिथि Date of Drawings	राशि ₹ Amount ₹	अवधि माह/दिनों में (आहरण की तिथि से अंतिम खाते बनाने की तिथि तक) Period (months/ days) from date of drawing to date of year ending	गुणनफल (राशि x अवधि) Product (Amount x Period)
			Total Product

Steps: i. अवधि की गणना: आहरण की तिथि से खाते बन्द करने की तिथि की अवधि

ii. अवधि को संबंधित धनराशि से गुणा करके गुणनफल ज्ञात करते है एवं उनका योग लगाते है।

iii. $\text{ब्याज} = \frac{\text{गुणनफल का योग x ब्याज की दर}}{100 \times 12 \text{ or } 365}$

उदाहरण 5: राम एक फर्म में साझेदार है उसके द्वारा निम्न राशियां आहरित की गयी है। 31-05-2016 को ₹ 2,000 व 30-09-2016 को ₹ 3,000 आहरण पर ब्याज की दर 12% वार्षिक है, खाते 31-12-2016 को बन्द किये जाते है। सरल विधि से आहरण पर ब्याज की गणना कीजिये।

हल : $2{,}000 \times \frac{7}{12} \times \frac{12}{100} = 140$ $3{,}000 \times \frac{7}{12} \times \frac{12}{100} = 90$

उदाहरण 6:

एक साझेदार ने विभिन्न तिथियों को निम्न आहरण किये:–

Date of Drawings	Amount ₹	Date of Drawings	Amount ₹
01-04-16	1,000	30-06-16	1,200
31-12-16	1,500	31-03-17	2,0000

आहरण पर ब्याज की दर 12% वार्षिक है, खाते 31-3-17 को बन्द किये जाते है।

हल :

Date of Drawings	Amount ₹	Months	Product
01-04-16	1,000	12	12,000
30-06-16	1,200	9	10,800
31-12-16	1,500	3	4,500
31-03-17	20,000	0	0
			27,300

$$\text{आहरण पर ब्याज} = \frac{\text{गुणनफल का योग} \times \text{ब्याज की दर}}{100 \times 12}$$

= ₹ 273

II जबकि नियमित अन्तराल पर समान राशि आहरित की गयी हो: तब आहरण पर ब्याज की गणना औसत अवधि विधि के आधार पर की जाती है।

$$\text{आहरण पर ब्याज} = \frac{\text{कुल आहरण} \times \text{ब्याज की दर} \times \text{औसत अवधि}}{100 \times 12}$$

औसत अवधि गणना करने के सूत्रः –

Situation	**n=No. of months in a year**	आहरण 12 माह के लिए किये गये हो (माह)	आहरण 9 माह के लिए किये गये हो (माह)	आहरण 6 माह के लिए किये गये हो (माह)
I. मासिक आहरण				
a) प्रत्येक माह के प्रारम्भ में	$\frac{n+1}{2}$	$\frac{12+1}{2} = 6.5$	$\frac{9+1}{2} = 5$	$\frac{6+1}{2} = 3.5$
b) प्रत्येक माह के अंत में	$\frac{n-1}{2}$	$\frac{12-1}{2} = 5.5$	$\frac{9-1}{2} = 4$	$\frac{6-1}{2} = 2.5$
c) प्रत्येक माह के मध्य में	$\frac{n}{2}$	$\frac{12}{2} = 6$	$\frac{9}{2} = 4.5$	$\frac{6}{2} = 3$
II. त्रैमासिक आहरण				
a) प्रत्येक तिमाही के प्रारम्भ में	$\frac{n+3}{2}$	$\frac{12+3}{2} = 7.5$	$\frac{9+3}{2} = 6$	$\frac{6+3}{2} = 4.5$
b) प्रत्येक तिमाही के अंत में	$\frac{n-3}{2}$	$\frac{12-3}{2} = 4.5$	$\frac{9-3}{2} = 3$	$\frac{6-3}{2} = 1.5$
c) प्रत्येक तिमाही के मध्य में	$\frac{n}{2}$	$\frac{12}{2} = 6$	$\frac{9}{2} = 4.5$	$\frac{6}{2} = 3$
III. जब आहरण की तिथि न दी गयी है	$\frac{n}{2}$	$\frac{12}{2} = 6$	$\frac{9}{2} = 4.5$	$\frac{6}{2} = 3$

Note: (1) जब ब्याज की दर के साथ प्रतिवर्ष (p.a.) शब्द न लिखा हो, तो ब्याज की गणना पूरे एक वर्ष के लिए की जायेगी। अर्थात् समय तत्व (Time factor) को ध्यान में नहीं रखा जायेगा।

उदाहरण 7: G,S,T एक फर्म में साझेदार है वह निम्न प्रकार आहरण करते हैं।

a. G प्रत्येक माह के प्रारम्भ में ₹ 2,000 का आहरण करता हैं। **b.** S प्रत्येक माह के अन्त में ₹ 3,000 का आहरण करता हैं।
c. T प्रत्येक माह के मध्य में ₹ 1,000 का आहरण करता हैं।

आहरण पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज लगाया जायेगा। वर्ष 2017 के लिए साझेदारों के आहरण पर ब्याज ज्ञात कीजिये।

हल : **G** कुल आहरण 2,000 x 12 = ₹ 24,000 आहरण पर ब्याज $= ₹\ 24,000 \times \frac{6.5}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 1,560$

S कुल आहरण 3,000 x 12 = ₹ 36,000 आहरण पर ब्याज $= ₹\ 36,000 \times \frac{5.5}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 1,980$

T कुल आहरण 1,000 x 12 = ₹ 12,000 आहरण पर ब्याज $= ₹\ 12,000 \times \frac{6}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 720$

उदाहरण 8:

P, Q व R ने 01.07.2016 को साझेदारी व्यवसाय प्रारम्भ किया। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्न आहरणों पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज की गणना कीजिये।

a. P प्रत्येक माह के प्रारम्भ में ₹ 500 आहरित किये। **b.** Q प्रत्येक माह के मध्य में ₹ 600 आहरित किये।
c. R प्रत्येक माह के अन्त में ₹ 700 आहरित किये।

हलः P कुल आहरण 500 x 9 = ₹ 4,500 आहरण पर ब्याज $= 45,00 \times \frac{5}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 220$

Q कुल आहरण 600 x 9 = ₹ 5,400 आहरण पर ब्याज $= 54,00 \times \frac{4.5}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 243$

R कुल आहरण 700 x 9 = ₹ 6300 आहरण पर ब्याज $= 63,00 \times \frac{4}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 252$

उदाहरण 9:

R,S व T एक फर्म में साझेदार है। प्रत्येक साझेदार ने 01.01.2017 से 30.06.2017 तक ₹ 2,000 प्रतिमाह आहरण किया। आहरण पर ब्याज की दर 10% वार्षिक आहरण पर ब्याज ज्ञात करों। जबकि

a. R प्रत्येक माह के प्रारम्भ में आहरण किया हो। **b.** S प्रत्येक माह के मध्य में आहरण किया हो।
c. T प्रत्येक माह के अन्त में आहरण किया हो।

हल : 01.01.2017 से 30.06.2017 तक 6 माह इसलिये n=6

R कुल आहरण 2,000 x 6 = ₹12,000 आहरण पर ब्याज $= 12,000 \times \frac{3.5}{12} \times \frac{10}{100} = ₹\ 350$

S कुल आहरण 2,000 x 6 = ₹12,000 आहरण पर ब्याज $= 12,000 \times \frac{3}{12} \times \frac{10}{100} = ₹\ 300$

T कुल आहरण 2,000 x 6 = ₹12,000 आहरण पर ब्याज $= 12,000 \times \frac{2.5}{12} \times \frac{10}{100} = ₹\ 250$

उदाहरण 10:

A,B व C एक फर्म में साझेदार है। 31.03.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए साझेदारों द्वारा किये गये आहरणों पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज की गणना कीजिये।

a. A ने प्रत्येक तिमाही के प्रारम्भ में ₹ 3,000 का आहरण किया। **b.** B ने प्रत्येक तिमाही के मध्य में ₹4,000 का आहरण किया।
c. C ने प्रत्येक तिमाही के अन्त में ₹ 2,500 का आहरण किया।

हल : n=12

A कुल आहरण 3,000 x 4 = ₹ 12,000 औसत अवधि = 7.5 माह, आहरण पर ब्याज $= 12,000 \times \frac{7.5}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 900$

B कुल आहरण 4,000 x 4 = ₹ 16,000 औसत अवधि = 6 माह, आहरण पर ब्याज $= 16,000 \times \frac{6.0}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 960$

C कुल आहरण 2,500 x 4 = ₹10,000 औसत अवधि = 4.5 माह, आहरण पर ब्याज $= 10,000 \times \frac{4.5}{12} \times \frac{12}{100} = ₹\ 450$

उदाहरण 11:

31.03.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए विराट ने निम्न आहरण किये। आहरण पर ब्याज की दर 10% है।

a.उसने वर्ष के दौरान ₹ 20,000 आहरित किये हो। **b.**उसने ₹ 2,000 प्रतिमाह आहरित किये हो।

हल : **a.** आहरण पर ब्याज $= \frac{20,000 \times 10}{100} = ₹\ 2,000$ **b.** आहरण पर ब्याज $= \frac{24,000 \times 10}{100} = ₹\ 2,400$

नोट: ब्याज की दर के साथ वार्षिक शब्द नहीं होने के कारण पूरे वर्ष के ब्याज की गणना की गयी है।

उदाहरण 12: R और S साझेदार हैं। वे लाभ को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते है। R निष्क्रिय साझेदार है। उसने ₹ 5,00,000 पूँजी का अंशदान किया है। S ने कोई पूँजी नहीं दी। साझेदारी संलेख में पूँजी पर 10% वार्षिक ब्याज और S को ₹ 2,500 प्रतिमाह वेतन देने का प्रावधान है। 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, पूँजी पर ब्याज और वेतन का प्रावधान करने से पहले, ₹ 40,000 का लाभ है। वर्ष के लिए लाभों का विभाजन दिखाइए।

R and S are partners sharing profits in the ratio of 3 : 2. R is a non-working partner. He contributed ₹ 5,00,000 as his capital. S did not contribute any capital. The partnership deed provides interest on capital @ 10% p.a. and salary to S as ₹ 2,500 p.m. The net profit before providing interest on capital and salary amounts to ₹ 40,000 for the year ended 31st March 2017. Show the distribution of profits for the year.

हल :

Profit & Loss Appropriation A/c

Dr. *For the year ending 31st March 2017* ***Cr.***

Particulars	**Amount ₹**	***Particulars***	**Amount ₹**
To Interest on R's Capital	25,000	By Net Profit (as per P & L A/c)	40,000
To S's Salary	15,000		
	40,000		40,000

नोटः– पूँजी पर ब्याज व वेतन का योग ₹ 80,000 बनता है जबकि लाभ ₹ 40,000 है। अतः लाभों को पूँजी पर ब्याज व वेतन के अनुपात 5 : 3 में बांटा गया है।

उदाहरण 13 : R और S क्रमशः ₹ 80,000 एवं ₹ 60,000 की पूँजी के साथ साझेदार है। 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए निम्न पर विचार करने के पूर्व लाभ ₹ 47,500 था।

i) पूँजी पर 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज लिया जाना हैं। **ii)** आहरणों पर 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जाना है। आहरण R के ₹ 16,000, S के ₹ 12,000 **iii)** R ने फर्म को ₹ 20,000 अग्रिम दिये है। **iv)** R को विक्रय पर, जो ₹ 2,00,000 पर 2% कमीशन दिया जाना है, जबकि S को वितरण योग्य लाभ का 10% कमीशन (कमीशन काटने के पूर्व किन्तु R के कमीशन को काटने के पश्चात्) दिया जाना हैं। **v)** यह निर्णय किया गया कि विभाजन योग्य लाभ का 10% संचय खाता में अन्तरित किया जाये।

R and S are partners with capitals of ₹ 80,000 and ₹ 60,000 respectively. The profit for the ended 31st March, 2017 amounted to ₹ 47,500 before considering the following :

i) Interest on capital be allowed @ 5% p.a. **ii)** Interest on drawings be charged @ 5% p.a. Drawings R – ₹ 16,000, S- ₹ 12000 **iii)** R had advanced loan to the firm amounting to ₹ 20,000 **iv)** R was allowed commission @ 2% on sales which was ₹ 2,00,000. S allowed commission @ 10% on divisible profit (before charging his commission but after charging R's commission.) **v)** It was decided to transfer 10% of divisible profit to Reserve Account.

Prepare Profit & Loss Appropriation Account.

हल :

Profit & Loss Account

Dr. *for the year ended 31st March, 2017* ***Cr.***

Particulars	***Amount ₹***	***Particulars***	***Amount ₹***
To Interest on R's Loan	1,200		
To Net Profit trans. to P. & L. App. A/c	46,300	By Profit for the year	47,500
	47,500		**47,500**

Profit & Loss Appropriation Account

Dr. *for the year ended 31st March,2017* ***Cr.***

Particulars		***Amount ₹***	***Particulars***		***Amount ₹***
To Interest on Capital :			By Profit and Loss A/c		46,300
R	4,000		By Interest on Drawings :		
S	3,000	7,000	R	400	
To Commission to R 2,00,000 x 2%		4,000	S	300	700
To Commission to S 36,000 x 10%		3,600			
To Reserve 32,400 x 10%		3,240			
To Capital Accounts					
R	14,580				
S	14,580	29,160			
		47,000			**47,000**

बंद हुये साझेदारी खातों में समायोजन
Past Adjustments in Closed Partnership Accounts

कभी– कभी साझेदारी फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के बाद यह ज्ञात होता है कि इन खातों में कोई गलती रह गयी हैं या साझेदारी संलेख में दी गयी शर्तों का पूरी तरह पालन नहीं हुआ हैं। अतः लेखांकन अवधि की समाप्ति के बाद इन शर्तों के पालन हेतु चूंकों (Ommission) अथवा गलतियों (Errors) के सुधार हेतु समायोजन की आवश्यकता होती हैं। इसके लिए किये गये लेखांकन व्यवहार को बंद हुये साझेदारी खातों में समायोजन कहा जाता है। प्रायः निम्न मदों के लिए समायोजन किये जाते हैं।

1. पूँजी पर ब्याज का लेखा न किया जाना या कम/अधिक लगा देना **2.** आहरण पर ब्याज का लेखा न किया जाना
3. साझेदारों के पारिश्रमिक (वेतन, फीस व कमीशन) का लेखा न करना **4.** गलत अनुपात में लाभों का विभाजन होना
5. लाभ–विभाजन अनुपात में परिवर्तन होना।

समायोजन की विधियाँ

एकल प्रविष्टि द्वारा समायोजन (Past Adjustment by Passing Single Entry) | लाभ–हानि समायोजन खाता खोलकर (Past Adjustment by P & L Adjustments A/c)

I. एकल प्रविष्टि द्वारा समायोजनः – जो साझेदारों को देना हैं, उनके खाते में (Cr) व जो राशि उनसे वसूल करनी हैं उसे उनके खाते में डेबिट करके एक विश्लेषण तालिका तैयार की जाती है। अन्त में शुद्ध प्रभाव के आधार पर समायोजन प्रविष्टि की जाती है।

Gaining Partner's Capital A/c Dr. (जिसे अधिक राशि मिली है)
    To Sacrificing Partner's Capital A/c (जिसे कम राशि मिली है)

II. लाभ हानि समायोजन खाता खोलकर समायोजनः –

(i) साझेदारों की पूँजी पर ब्याज, वेतन, कमीशन आदि के छूट जाने के लिए
P & L Adjustment A/c Dr.
    To Partner's Capital/Current Account

(ii) आहरण पर ब्याज छूट जाने के लिए
Partner's Capital/Current A/c Dr.
    To P & L Adjustment A/c

(iii) अन्त में P & L Adjustment A/c बनाकर उसके शेष को साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बांटते हैं।

a. P & L Adjustment A/c का Cr. शेष (अर्थात् लाभ होने पर)
P & L Adjustment A/c Dr.
    To Partner's Capital/Current Account

b. P & L Adjustment A/c का Dr. शेष (अर्थात् हानि होने पर): विपरीत प्रविष्छियां बनाएंगे

Profit & Loss Adjustment A/c
For the year ended..........................

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital			By Interest on Drawings		
A	xx		A	xx	
B	xx	xx	B	xx	xx
To Partner's Salary			By Partner's Capital A/c		
A	xx		Current A/c (share of Loss)		
B	xx	xx	A	xx	
To Partner's Commission			B	xx	xx
A	xx		(Balancing Figure)		
B	xx	xx			
		xx			xx

नोट :– यदि पूँजी खाते स्थिर पूँजी खाता पद्धति पर रख गये है तो लेखा पूँजी खाते के स्थान पर चालू खाते के माध्यम से करेंगे।

उदाहरणः 14 : R, S तथा T एक फर्म में साझेदार है। 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि बाँटते हैं। उनके पूँजी खातों के शेष 31 मार्च 2017 को आहरण तथा लाभ का समायोजन करने के पश्चात् इस प्रकार है :

R ₹ 1,15,000 S ₹ 70,000 तथा T ₹ 42,000 वर्ष के खाते बन्द करने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि पूँजी तथा आहरण पर 10% p.a. ब्याज की दर से ब्याज लगाना रह गया। उनके आहरण इस प्रकार थे – R ₹ 15,000, S ₹ 10,000 तथा T ₹ 8,000 जिन पर ब्याज क्रमशः ₹ 1,000, ₹ 600 तथा ₹ 400 बना। वर्ष का लाभ, बिना पूँजी व आहरण पर ब्याज के समायोजन के पूर्व ₹ 60,000 था। इन समायोजनों के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए तथा लाभ–हानि समायोजन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते तैयार कीजिये।

R, S and T are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2 : 1. On March 31st 2017 their capital accounts show balances-R ₹ 1,15,000, S ₹ 70,000 and T ₹ 42,000, after making all the necessary adjustments in connection with drawings and net profit. After closing the books of accounts it was found that interest on capital and drawings @ 10% was not provided. The drawings of the partners were- ₹ 15,000, S ₹ 10,000 and T ₹ 8,000 and the interest thereon amounted to ₹ 1000, 600 and 400 respectively. The net profit for the year before considering above interest on capital and drawings amounted to ₹ 60,000.

हल : प्रश्न में दी गई साझेदारों की पूँजी वर्ष के अन्त की पूँजी है, जबकि पूँजी पर ब्याज की गणना करने हेतु वर्ष के आरम्भ की पूँजी ज्ञात होनी चाहिए।

1 अप्रैल 2016 को पूँजी का शेष होगा :

Particulars	R ₹	S ₹	T ₹
Capital as on 31.03.2017	1,15,000	70,000	42,000
Add : Drawings during the year	15,000	10,000	8,000
	1,30,000	80,000	50,000
Less: Profit already credited	30,000	20,000	10,000
Capital as on 01.04.2016	1,00,000	60,000	40,000
Interest on Capital @ 10 % p.a.	10,000	6,000	4,000

Journal (Adjustment Entries)

Date	Particulars		L.F.	₹	₹
2017 Mar,31	P & L Adjustment A/c	Dr.		20,000	
	To R's Capital A/c				10,000
	To S's Capital A/c				6,000
	To T's Capital A/c				4,000
	(Adjustment of Interest on Capital not written in the Profit & Loss Account)				
Mar,31	R's Capital A/c	Dr.		1,000	
	S's Capital A/c	Dr.		600	
	T's Capital A/c	Dr.		400	
	To P & L Adjustment A/c				2,000
	(Adjustment of Interest on drawings not written in the P & L Account)				
Mar,31	R's Capital A/c	Dr.		9,000	
	S's Capital A/c	Dr.		6,000	
	T's Capital A/c	Dr.		3,000	
	To P & L Adjustment A/c				18,000
	(Loss on account of adjustment distributed to partners in their profit sharing ratio.)				

Profit and Loss Adjustment Account (For the year ended on 31st March 2017)

Dr. Cr.

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital :			By Interest on Drawings:		
R	10,000		R	1,000	
S	6,000		S	600	
T	4,000	20,000	T	400	2,000
			By Partner's Capital A/c :		
			R	9,000	
			S	6,000	
			T	3,000	18,000
		20,000			**20,000**

Partner's Capital Account

Dr. Cr.

Particulars	Amount ₹ R	S	T	Particulars	Amount ₹ R	S	T
To P & L Adjustment a/c (Interest on Drawings)	1,000	600	400	By Balance b/d	1,15,000	70,000	42,000
To P & L Adjustment a/c (Loss on Adjustments)	9,000	6,000	3,000	By P&L Adjustment a/c (Interest on Capital)	10,000	6,000	4,000
To Balance c/d	1,15,000	69,400	42,600				
	1,25,000	**76,000**	**46,000**		**1,25,000**	**76,000**	**46,000**

उपर्युक्त समायोजन केवल एक प्रविष्टि द्वारा भी किया जा सकता है। ऐसी दशा में निम्नलिखित तालिका से समायोजन की राशि निकाली जायेगी तथा फिर नीचे दी गई प्रविष्टि की जायेगी (जब प्रश्न में केवल एक समायोजन प्रविष्टि करने के लिये ही कहा जाये) :

Analytical Table (विश्लेषण तालिका)

Particulars	R		S		T		Firm	
	Dr. ₹	Cr. ₹	Dr. ₹	Cr. ₹	Dr. ₹	Cr. ₹	Dr. ₹	Cr. ₹
Interest on Capital	--	10,000	--	6,000	--	4,000	20,000	
Interest on Drawings	1,000	--	600	--	400	--	--	2,000
							20,000	2,000
Loss of ₹ 18,000 debited to partners in the ratio 3: 2 : 1	9,000	--	6,000	--	3,000	--	--	18,000
Total	10,000	10000	6,600	6,000	3,400	4,000	20,000	20,000
Final Adjustment		--	600 (Dr.)	--		600 (Cr.)		

Particulars		Amount ₹ Dr.	Cr.
S's Capital A/c	Dr.	600	
To T's Capital A/c			600
(Adjustment of Partner's Accounts made)		**600**	**600**

Partner's Capital Account

Dr. Cr.

Particulars	Amount ₹ R	S	T	Particulars	Amount ₹ R	S	T
To T's Capital A/c		600		By Balance b/d	1,15,000	70,000	42,000
To Balance c/d	1,15,000	69,400	42,600	By S's Capital A/c			600
	1,15,000	**70,000**	**42,600**		**1,15,000**	**70,000**	**42,600**

साझेदार को लाभ का आश्वासन या गारंटी
(Guarantee of Profit to a Partner)

कभी–कभी फर्म के हित में किसी ऐसे व्यक्ति को साझेदार बना लिया जाता है, जो किसी क्षेत्र विशेष में विशिष्ट योग्यता रखता हैं। ऐसा साझेदार न्यूनतम लाभ के संबंध में पुराने साझेदारों से आश्वासन चाहता हैं, ताकि उसे भविष्य में किसी प्रकार की हानि न हों। इसे ही लाभ की गारन्टी या आश्वासन कहते है। यह गारन्टी चार प्रकार की हो सकती है–

1.फर्म द्वारा गारन्टी (Gurantee by firm) **2**. साझेदार द्वारा गारन्टी (Gurantee by Partners) **3**. साझेदार द्वारा फर्म को गांरटी (guarantee by partner to firm) **4**.साझेदार द्वारा फर्म को और फर्म द्वारा साझेदार को एक साथ गांरटी (Simultaneous gurantee by the partner to the firm and by the firm to the partner)

1.फर्म द्वारा गारन्टी या सभी साझेदारों द्वारा गारन्टी– वितरण योग्य लाभों में गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा उसके लाभ विभाजन अनुपात में ज्ञात कर शेष लाभ शेष साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बांट दिया जायेगा। तत्पश्चात् गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा गारन्टी की राशि से जितना कम होता है, उसकी पूर्ति शेष साझेदारों के लाभ–हानि अनुपात में की जायेगी।

नोटः (1) गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा गारन्टी की राशि से अधिक है तो वह अधिक राशि ही प्राप्त करेगा।

(2) यदि फर्म को हानि हो तो भी गारन्टी प्राप्त साझेदार गारन्टी की राशि प्राप्त करेगा। (3) कभी–कभी प्रश्न में शेष साझेदारों द्वारा गारन्टी की राशि वहन करने का अनुपात दिया रहता है, तो उसी अनुपात में शेष साझेदारों द्वारा गारन्टी की राशि की पूर्ति की जायेगी।

2.साझेदार द्वारा गारन्टी – यदि गारन्टी किसी साझेदार विशेष द्वारा दी गयी है, तो फर्म के वितरण योग्य लाभों जो समस्त साझेदारों में उनके लाभ–हानि अनुपात में बांट दिया जायेगा। गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा गारन्टी की राशि से जितना कम होता है, उतनी राशि गारन्टी देने वाले साझेदार के हिस्से में से घटा दी जायेगी तथा गारन्टी प्राप्त करने वाले साझेदार के हिस्से में जोड़ दी जायेगी।

उदाहरण 15: X तथा Y 3 : 2 के अनुपात में एक फर्म में साझेदार है। Z को लाभ 1/5 के भाग के लिए साझेदार बनाया तथा फर्म द्वारा ₹ 50,000 के न्यनूतम लाभ की गारन्टी दी गई। उन्होने तय किया कि X तथा Y के लाभ विभाजन अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वर्ष 2016-2017 में ₹ 1,50,000 का लाभ हुआ। लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए यदि,
(1) गारन्टी फर्म द्वारा दी गयी हो। (2) जब गारन्टी X द्वारा दी गयी हो।

X and Y are partners in a firm sharing profit and loss in the ratio of 3 : 2. They decided to admit Z with 1/5 the share in profits with a guaranteed amount of ₹ 50,000. They decided that the profit sharing ratio between X and Y will not change. The firm earned profits of ₹ 1,50,000 for the year 2016-17. Prepare Profit & Loss Appropriation Account when -: (1) Guarantee is provided by firm (2) Guarantee is provided only by X

हल: 1 **Profit & Loss Appropriation A/c** (for the year ending 31st March 2017)

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To X's Capital	72,000		By Profit for the year	1,50,000
Less guarantee to Z	12,000	60,000		
To Y's Capital	48000			
Less guarantee to Z	8,000	40,000		
To Z's Capital	30,000			
Add guarantee by X	12,000			
Add guarantee by Y	8,000	50,000		
		1,50,000		**1,50,000**

अनुपात = 12:8:5

वैकल्पिक रीति : 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ ₹ 1,50,000 है। इस लाभ में Z का भाग ₹ 30,000 उसे दी गयी न्यूनतम लाभ की गारन्टी ₹ 50,000 से कम है। अतः सर्वप्रथम उपलब्ध लाभ में से Z को ₹ 50,000 लाभ दिया जायेगा। शेष लाभ ₹ 1,00,000 Z और Y में उनके लाभ विभाजन अनुपात (3 : 2) में बांट दिया जायेगा। अर्थात् X को ₹ 60,000 व Y को ₹ 40,000 लाभ प्राप्त होगा।

P & L Appropriation A/c

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Capital			By Net Profit	1,50,000
X	60,000			
Y	40,000			
Z	50,000	1,50,000		
		1,50,000		1,50,000

2. जब गारन्टी X द्वारा दी गयी हो

Dr. **P & L Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Capital			By Net Profit	1,50,000
X	72,000			
Less guarantee to Z	20,000	52,000		
Y		48,000		
Z	30,000			
Add guarantee from X	20,000	50,000		
		1,50,000		1,50,000

3) साझेदार द्वारा फर्म को गांरटी (Guarantee by partner to Firm) कोई साझेदार फर्म के लिए किसी निश्चित न्यूनतम आय के कमाने की गांरटी दे। यदि साझेदार गांरटी की राशि फर्म के लिए नहीं कमा पाता है। तो कमी की राशि उसके पूंजी खाते से

ले ली जाती है।

उदाहरण 16: अ, ब, व स 5:3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार है। सी फर्म को न्यूनतम ₹ 60,000 कमाने की गांरटी देता है। लेकिन स फर्म के लिए केवल ₹ 40,000 ही अर्जित करता है। फर्म द्वारा कुल कमाया गया लाभ ₹ 1,00,000 साझेदारों मे लाभ के बटंवारे हेतु लाभ हानि नियोजन खाता बनाइए।

A,B and C are partner, sharing profit in ratio 5:3:2 C gives guarantee to firm of minimum ₹ 60,000 earnings but C could earn only ₹ 40,000 for the firm. Total profit earned by the firm is ₹ 1,00,000. Prepare Profit & Loss appropriation account for distribution of profit among partners.

Dr. **Profit and Loss Appropriation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partners capital A/c		By Profit & Loss Account	1,00,000
A	60,000	By C' s capital A/c	20,000
B	36,000	(guaranteed amount)	
C	24,000		
	1,20,000		1,20,000

टिप्पणी – इस प्रकार वास्तव में स को केवल ₹ 4000 का लाभ ही प्राप्त हुआ है । क्योंकि उसके द्वारा गारन्टी की गई राशि में कमी ₹ 60000 - 40000 = ₹ 20000 उसके पूँजी खाते से चार्ज की गई है ।

4. साझेदार द्वारा फर्म को और फर्म द्वारा साझेदार को एक साथ गांरटी (Simultaneous gurantee by the partner to the firm and by the firm to the partner) साझेदार द्वारा दी गई गारन्टी दिये गए लाभ से उसने कम आय कमा कर दी है तो अन्तर की राशि उससे वसूल कर लाभ हानि नियोजन खाते में क्रेडिट करेंगे तथा फर्म ने जिस साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी दी है उसे न्यूनतम राशि देने के बाद शेष साझेदार बचे हुए लाभ को अपने लाभ विभाजन अनुपात में बांटेगे यदि लाभ अपर्याप्त है।

उदाहरण 17. अ, ब, तथा स 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार है उनके बीच तय हुआ कि **1.** स को न्यूनतम ₹ 1,50,000 लाभ के हिस्से के रूप में दिया जायेगा। **2.** ब ने फर्म को गांरटी दी कि न्यूनतम ₹ 2,40,000 फर्म को कमा कर देगा। फर्म ने चालू वर्ष में ₹ 7,60,000 की आय अर्जित की। इसमें ब द्वारा फर्म को कमा कर दी गई राशि ₹ 1,60,000 शामिल है।

A, B and C are Partner, sharing profit in ratio 3:2:1. It was agreed that **1.** C would get minimum profits ₹ 1,50,000 **2.** B made guarantee to the firm that he would earn minimum ₹ 2,40,000 Firm earned ₹ 7,60,000 for the current year it included ₹ 1,60,000 earned by B.

Dr. **Profit and Loss Appropriation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partners Capital A/c		By Profit & Loss Account	7,60,000
A	4,14,000	By B' s capital A/c	80,000
B	2,76,000	(guaranteed amount)	
C	1,50,000		
	8,40,000		**8,40,000**

कार्यशील टिप्पणियां : **1.** ब ने न्यूनतम ₹ 2,40,000 कमाने की गारन्टी दी जबकि केवल ₹ 1,60,000 कमाये। अतः शेष ₹ 80,000 ब के पूँजी खाते से चार्ज किये गये हैं।

2.. फर्म के लाभ 7,60,000+80,000=8,40,000 में स का 1/6 हिस्सा ₹ 1,40,000. है। जबकि फर्म ने उसे ₹ 1,50,000 भुगतान की गारन्टी दी है अतः शेष लाभ ? (8,40,000 –1,50,000) 6,90,000 अ व ब 3:2 के अनुपात में बाटेंगे।

उदाहरण 18 :

1 जनवरी 2016 को एक फर्म में 'अ', 'ब', और 'स' की पूँजी खातों का शेष क्रमशः ₹ 10,000, ₹ 18,000, एवं ₹ 15,000 था। उन्होंने लाभ हानि बाटने से पूर्व निम्न समायोजन करने का निश्चय किया : **1.** अ को प्रति माह ₹ 1000 वेतन के दिये जायें। **2.** सभी साझेदारों को 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज पूँजी पर दिया जायें। **3.** एक से तीन तक समायोजन करने के बाद 'अ' को शेष लाभ पर 10 प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा। **4.** एक से चार तक समायोजन करने के बाद 'ब' को शेष लाभ का 1/4 भाग दिया जायेगा। **5.** शेष लाभ 'अ' एवम् 'स' में 3 : 2 के अनुपात में बॉटा जाये। उपरोक्त समायोजनों को करने से पूर्व फर्म का लाभ 31 दिसम्बर 2016, को ₹ 44,900 था।

फर्म का लाभ –हानि नियोजन खाता एवं साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

on 1st January 2016 the balances of capital a/cs of A, B and C were ₹ 10,000, ₹ 18,000, and ₹ 15,000 respectively. They decided to make following adjustments before distributing profit & loss.
(i) ₹ 1000 per months is to be given to A as salary. **(ii)** 10% P.A. interest on capital is to be given to all partners. **(iii)** After adjusting one to three adjustments, 10% commission is to be given to A on Balance profit. **(iv)** After adjusting one to four adjustments, 1/4 part of balance of profit is to given to B. **(v)** Balance of profit is to divided in 3:2 ratio to A and C On 31st December, 2016, the profit of the firm was ₹ 44,900 before above adjustment. Prepare Profit and Loss Appropriation Account of the Firm and partners Capital Accounts.

हलः

Profit and Loss Appropriation Account
for the year ended 31 December, 2016

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Salary to A	12,000	By Profit & Loss A/c	44,900
To Interest on Capital:			
A 1,000			
B 1,800			
C <u>1,500</u>	4,300		
To Commission to A $\left(28,600 \times \frac{10}{110}\right)$	2,600		
To Partner's Capital A/c			
B $(26,000 \times \frac{1}{5})$ 5,200			
C $(20,800 \times \frac{3}{5})$ 12,480			
D $(20,800 \times \frac{2}{5})$ <u>8,320</u>	26,000		
	44,900		**44,900**

Dr. **Partners Capitals Accounts** **Cr.**

Date	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Date	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
2016	To Balance c/d	38,080	25,000	24,820	2016	By Balance b/d	10,000	18,000	15,000
31Dec,					31Dec,	By Salary A/c	12,000	-	-
					31Dec,	By Int. on Capital A/c	1,000	1,800	1,500
					31Dec,	By Commission A/c	2,600	-	-
					31Dec,	By P&L App. a/c	12,480	5,200	8,320
		38,080	**25,000**	**24,820**			**38,080**	**25,000**	**24,820**

उदाहरण 19 : 1 जनवरी, 2016 को अ,ब व स 2 : 1 : 1 के अनुपात में लाभ हानि बांटते हुये साझेदारी में सम्मिलित हुये। साझेदारी संलेख में स को लाभों की न्यनूतम ₹ 70,000 लाभ की गारण्टी की व्यवस्था की गयी। 31 दिसम्बर, 2016 को अन्त होने वाले वर्ष में अ के ऋण पर ₹ 9,000 ब्याज चार्ज करने से पूर्व फर्म को हानि ₹ 2,00,000 की हुई। 31 दिसम्बर 2016 को फर्म का लाभ–हानि नियोजन खाता तैयार कीजिये।

A, B and C entered into partnership on 1st January 2016 to share profit in the ratio of 2 : 1 :1. It was provided in the deed that C's share of profit will not be less than ₹ 70,000 p.a.. The loss for the year ended 31st December 2016 where ₹ 2,00,000 before allowing interest ₹ 9,000 A loss which is due for the current year. Prepare Profit and Loss Appropriation A/c for the year ended 31st December 2016.

हल : हानि की दशा में लाभ – हानि खाता बनाया जाएगा ना कि लाभ– हानि नियोजन खाता।

Profit and Loss Account
for the year ended 31 Dec., 2016

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Loss before Interest on A's Loan	2,00,000	By Net Loss transferred to:	
To interst on A's Loan	9,000	A's Capital A/c (2/3)	1,86,000
To C's Capital A/c (Minimum share of Profit)	70,000	B's Capital A/c (1/3)	93,000
	2,79,000		**2,79,000**

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

–भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा के अनुसार '' साझेदारी उन व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध है जो ऐसे व्यापार के लाभों को विभाजित करने के लिए सहमत हुऐ है, जिसका संचालन उन सबके द्वारा या उन सबकी ओर से किसी के द्वारा किया जाता है।''

–जो व्यक्ति किसी व्यापार या व्यवसाय को करने का समझौता करते है, उन्हे साझेदार तथा साझेदारों के समूह को फर्म कहा जाता है। फर्म का व्यवसाय फर्म के नाम से किया जाता है।

–सीमित पूँजी, सीमित प्रबन्ध क्षमता व चातुर्य, अनिश्चित अस्तित्व आदि एकाकी व्यापार की कमियों को दूर करने के लिए साझेदारी की आवश्यकता हुई।

– साझेदारी की विशेषतायें:

(1) दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना, अधिकतम संख्या 50 तक सीमित **(2)** साझेदारों के मध्य समझौता या अनुबन्ध होना **(3)** लाभों का विभाजन में प्रत्येक साझेदार का भाग होना, हानि में प्रत्येक का भाग आवश्यक नहीं **(4)** व्यवसाय का होना (5) व्यवसाय का संचालन सभी के द्वारा अथवा उन सभी की ओर से किसी एक द्वारा किया जाना **(6)** साझेदारी का संचालन भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 द्वारा होना **(7)** साझेदारों का असीमित दायित्व होता है **(8)** साझेदारी फर्म का साझेदारों से पृथक अस्तित्व नहीं होता। साझेदारों के मध्य लिखित समझौता साझेदारी संलेख कहलाता है। इसमें साझेदारों के पारस्परिक अधिकार एवं कर्तव्यों का उल्लेख होता है तथा भविष्य में साझेदारों के मध्य किसी भी प्रकार का मतभेद होने पर इस संलेख द्वारा उसे आसानी से दूर किया जा सकता है। साझेदारी संलेख के अभाव में लेखांकन की दृष्टि से निम्न नियम लागू होते है **(9)** साझेदारों को पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जाएगा, साझेदारों के आहरण पर कोई ब्याज नहीं लिया जाऐगा। कार्य व अतिरिक्त कार्य का कोई पारिश्रमिक (वेतन आदि) नहीं दिया जायेगा। समस्त साझेदार अपना लाभ हानि समान अनुपात में बांटेंगे। साझेदार द्वारा फर्म को दिये गये ऋण पर 6% वार्षिक दर से ब्याज दिया जायेगा।

– साझेदारों के पूँजी खाते रखने की दो विधियां है–

(1) परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि : इसमें प्रत्येक साझेदार का एक ही पूँजी खाता बनाया जाता है, पूँजी से सम्बन्धित सभी मदों के लेखा उसी पूँजी खाते में किया जाता है। **(2) अपरिवर्तनशील पूँजी खाता विधि** : इस विधि में प्रत्येक साझेदार के दो खाते बनाये जाते है साझेदारों के चालू खाते, पूँजी खाते व साझेदारों के चालू खाते, पूँजी लगाने व पूँजी में कमी को छोड़कर पूँजी सम्बन्धी अन्य सभी मदों का लेखा चालू खातों में किया जाता हैं।

– लाभ हानि का विभाजन :

लाभ हानि खाता बनाने के बाद लाभ हानि नियोजन खाता बनाया जाता हैं, जो लाभ हानि खाते का विस्तार मात्र है। इस खाते में साझेदारों को देय वेतन पारिश्रमिक, कमीशन पूँजी पर ब्याज आदि को डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है। शुद्ध लाभ तथा आहरण पर ब्याज को क्रेडिट पक्ष में दर्शाया जाता है, और इस खाते को शेष साझेदारों के पूँजी खाते में लाभ विभाजन अनुपात में में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

– **पूँजी पर ब्याजः** पूँजी पर ब्याज निर्धारित दर से समय के अनुसार तभी दिया जाता है जब साझेदारी संलेख में इसका स्पष्ट उल्लेख हो, यदि पूँजी पर ब्याज देने का प्रावधान है तब भी पूँजी पर ब्याज लाभों में से ही दिया जायेगा। जब तक की इसे लाभों पर प्रभार (Charge) न माना गया हो।

– **आहरण पर ब्याजः** साझेदारी संलेख में व्यवस्था होने पर आहरण पर ब्याज लिया जा सकता हैं आहरण पर ब्याज ज्ञात करने की दो प्रमुख विधियां है। **(1)** गुणनफल विधि **(2)** मासिक आहरण विधि

– **साझेदारी खातों को बन्द करने के पश्चात् समायोजनः** यदि अन्तिम लेखा तैयार करने के पश्चात कोई समायोजन करना बाकी रहना ध्यान में आता है, तो एक प्रविष्टि द्वारा या लाभ – हानि समायोजन खाता बनाकर आवश्यक प्रविष्टियों द्वारा समायोजन/सुधार किया जाता है। साझेदार को लाभ का आश्वासन या गारण्टी कभी–कभी किसी साझेदार को फर्म की ओर से न्यूनतम लाभ की गारण्टी दी जाती है, ऐसी स्थिति में गारण्टी से कम प्राप्त राशि सम्बन्धी गारण्टी देने वाले साझेदार या फर्म से उसी कमी की पूर्ति की जाती है।

शब्दावली (Glossary)

साझेदारी	Partnership	साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच एक संबध है जो एक ऐसे व्यवसाय के लाभ को बॉटने के लिए सहमत है, जिसका संचालन उन सबके द्वारा या उनमें से किसी एक के द्वारा किया जाता है ।
साझेदार	Partners	साझेदारी में जो व्यक्ति शामिल होते है, वे साझेदार कहलाते है ।
फर्म का नाम	Name of Firm	जिस नाम से व्यवसाय संचालित होता है उसे फर्म का नाम कहते है।
सझेदारी संलेख	Partnership Deed	साझेदारों में मध्य जो लिखित समझौता होता है, उसे साझेदारी संलेख कहते है ।
साझेदारों की पूँजी	Partners Capital	साझेदारों द्वारा फर्म में लगाया गया धन साझेदारों की पूँजी कहलाते है ।

स्थायी पूँजी	Fixed Capital	जब साझेदारी फर्म के जीवनकाल में पूँजी को अपरिवर्तित रखने का निर्णय लिया जाते है, तो इसे स्थायी पूँजी कहते है ।
परिवर्तनशील पूँजी	Fluctuating Capital	जब पूँजी से सम्बन्धित सभी मदों का लेखा पूँजी खाते में किया जात है तो पूँजी खाते का शेष परिवर्तित होता रहता है इस लिए इस प्रकार रखा गया पूँजी खाता परिवर्तनशील पूँजी खाता कहलाता है ।
आहरण	Drawings	साझेदारों द्वारा व्यवसाय से निजी उपयोग के लिए निकाला गया धन आहरण कहलाता है ।
लाभ विभाजन अनुपात	Profit Sharing Ratio	जिस अनुपात में साझेदार लाभ बांटने के लिए सहमत हुए है।
लाभ– हानि नियोजन खाता	Profit & Loss Appropriation Account	ये लाभ हानि खाते का विस्तार है साझेदारों से सम्बन्धित समायोजन जैसे साझेदारो का वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि का लेखा करने के बाद इस खाते का शेष साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में वितरित किया जाता है ।

अभ्यासार्थ प्रश्न
(Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple choice questions)

1. साझेदारी संलेख के अभाव में ऋण पर ब्याज की दर होगी :–

अ) 6 प्रतिशत प्रतिमाह **ब)** 0. 50 प्रतिशत प्रतिमाह **स)** 5 प्रतिशत वार्षिक दर **द)** 4 प्रतिशत वार्षिक दर

In the absence of Partnership Deed the interest on loan is payable at:

(a) 6% p.m. **(b)** 0. 50% p.m. **(c)** 5% p.a. **(d)** 4% p.a.

2. साझेदारी संलेख के अभाव में लाभ–हानि अनुपात होगा :–

अ) पूँजी के अनुपात में **ब)** बराबर–बराबर **स)** त्याग अनुपात में **द)** जैसा साझेदारों ने तय किया हो

In absence of Partnership deed profit sharing ratio is:

(a) in capital ratio **(b)** equally **(c)** sacrificing ratio **(d)** as decided by the partners

3. आहरण पर ब्याज की गणना 10 प्रतिशत की वार्षिक दर से कीजिए। यदि उसने वर्ष के दौरान ₹ 24,000 आहरण किए।

अ) ₹ 1,200 **ब)** ₹ 1,800 **स)** ₹ 2,400 द) ₹ 1,600

Calculate the Interest on Ram's drawings @ 10% if he withdrew ₹ 24,000 during the year.

(a) ₹ 1,200 **(b)** ₹ 1,800 **(c)** ₹ 2,400 **(d)** ₹. 1,600

4. साझेदारी संलेख के अभाव में

अ) पूंजी पर ब्याज दिया जायेगा **ब)** आहरण पर ब्याज चार्ज किया जायेगा

स) वेतन दिया जायेगा **द)** लाभों में हिस्सा दिया जायेगा।

In absence of partnership deed:

(a) Interest on capital is given **(b)** Interest on Drawing is charged

(c) Salary is given **(d)** Provided share in profits

5. एक साझेदारी में साझेदारों की अधिकतम संख्या होती है

अ) 2 **ब)** 10 **स)** 20 **द)** 50

In a firm maximum numbers of partners are:

(a) 2 **(b)** 10 **(c)** 20 **(d)** 50

6. साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदार .... पाने का हकदार नहीं है

अ) वेतन **ब)** पूँजी पर ब्याज **स)** फीस व कमीशन **द)** उपर्युक्त सभी

Partners are not entitled to receive -------- in the absence of partnership agreement:

(a) salaries **(b)** interest on capital **(c)** fees and commission **(d)** all the above

7. साझेदारों के पूँजी खातों का शेष कम होगा –

अ) पूंजी पर ब्याज से **ब)** आहरण पर ब्याज से **स)** वेतन से **द)** साझेदारों के ऋण पर ब्याज से

The balance of partners capital account will reduce with ------

(a) Interest on capital **(b)** Interest on drawings **(c)** Salaries **(d)** Interest on partners loan

8. साझेदारी संलेख साझेदारों के मध्य .... समझौता है

अ) मौखिक **ब)** लिखित **स)** गर्भित **द)** इनमें से कोई नहीं

Partnership Deed is the agreement between the partners in:
(a) Oral **(b)** written **(c)** Implied **(d)** None of these
9. वे व्यक्ति जो साझेदारी का निर्माण करते है व्यक्तिगत रूप से .... कहलाते है।
अ) फर्म ब) साझेदार स) एकाकी व्यापारी द) संयुक्त साहसी
The persons who forms the partnership are individually known as :
(a) Firm **(b)** Partners **(c)** Sole trader **(d)** Coventurers
10. आहरण पर ब्याज फर्म के लिए .... है।
अ) आय ब) व्यय स) आय व व्यय दोनों द) इनमें से कोई नहीं
Interest on Drawings is ---------- for firm:
(a) Income **(b)** Expenses **(c)** Income and Expense both **(d)** none of these

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions)

1. एक फर्म में साझेदारों की न्यूनतम और अधिकतम सदस्यों की सीमा क्या हैं ?
What is the minimum and maximum limit on number of partners in a firm?
2. साझेदारी फर्म से आप क्या समझते हैं ?
What do you understand by Partnership Firm?
3. लाभ हानि नियोजन खाते से आप क्या समझते हैं ?
What do you mean by Profit and Loss Appropriation Account ?
4. ऐसी दो दशाएं बताइए जिससे साझेदारों के स्थायी पूँजी खाते में परिवर्तन हो सकता है।
Give two circumstances in which fixed capital of partners may change.
5. फर्म की पुस्तकों में खोले जाने वाले खातों के नाम बताइए–
a.जबकि पूँजी स्थिर हो। **b.**जबकि पूँजी अस्थिर हो।
What Account are opened:
(a) When the Capitals are fixed. **(b)** When the capitals are fluctuatring.
6. साझेदार की असीमित देयता का क्या अर्थ है ?
What is meant by unlimited liabilities of partner ?
7. लाभों पर प्रभार की तीन मदें बताइये।
State any three items of charges on Profits.
8. साझेदारी की आवश्यकता के कोई दो बिन्दु लिखो।
State any two points regarding need of partnership.
9. परिवर्तनशील पूँजी खाते के क्रेडिट पक्ष में कौन–कौन सी मद दिखाई जाती है ?
What items shown on the credit side of Fluctuating Capital Account ?
10. परिवर्तनशील पूँजी खाते के डेबिट पक्ष में कौन–कौन सी मदे दिखाई जाती हैं ?
What items core shown on the Debit side of Fluctuating Capital Account ?
11. दो मदें लिखिए जो लाभ–हानि नियोजन खाते के क्रेडिट में लिखी जाती है।
Name any two items which are shown the credit of Profit and Loss Appropriation Account.
12. दो मदें लिखिए जो लाभ, हानि नियोजन के डेबिट में लिखी जाती है।
Name any two items which are shown the debit of profit and Loss Appropriation Account.
13. शिप्रा और श्रुति एक फर्म में साझेदार है। फर्म के अन्तिम खाते बनाने के बाद यह ज्ञात हुआ कि शिप्रा को 2000 रूपये वेतन नहीं दिया। सुधार हेतु जर्नल प्रविष्टि दीजिये।
Shipra and Shruti are partners in a firm. After preparing the Final Account. It was found that salary of 2000 was not given to shipra. Give Journal entry for rectification.
14. A, B व C फर्म ने वर्ष के दौरान ₹ 20,000 का लाभ कमाया जिसे साझेदारों में 2 : 1 : 1 के अनुपात में विभाजित कर दिया गया जबकि यह 1 : 2 : 2 के अनुपात में होना चाहिए था। इसके सुधार हेतु एक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।(RBSE 2001)
The Firm of A, B & C earned a profit of ₹ 20,000 during the year which was distributed among the partners in the ratio of 2 : 1 : 1, whereas it should be in the ratio of 1 : 2 : 2. Give a Journal entry for rectification.
15. बन्द साझेदारी खातों में समायोजन की विधियों के नाम लिखिए। (RBSE 2008)
Write the names of methods regarding adjustment in closed partnership Accounts.
16. प्रत्येक महीने के मध्य में निकाली गई बराबर राशियों के आहरण पर ब्याज गणना कैसे करेंगे ?
How would you calculate interest on drawings of equal amounts drawn in the middle of every month?

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions)

1. दो मदें लिखिए जो लाभ–हानि नियोजन खाते के क्रेडिट में लिखी जाती है।
Name any two items which are shown the credit of Profit and Loss Appropriation Account.

2. साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में निम्न सम्बन्धित नियम बताइए ?
(A) साझेदारों की पूँजी पर ब्याज **(B)** साझेदारों के आहरण पर ब्याज **(C)** साझेदारों के ऋण पर ब्याज
(D) साझेदारों का लाभ विभाजन अनुपात **(E)** साझेदारों का वेतन
In the absence of partnership deed, what are the rules relating to :
(A) Interest on partner's Capital **(B)** Interest on partner's Drawing **(C)** Interest on partner's Loan
(D) Partner's profit sharing Ratio **(E)** Salaries of Partners.

3. एक फर्म के दो साझेदार रश्मि व आशीष है। रश्मि प्रत्येक माह की प्रथम तिथि को ₹ 1000 तथा आशीष प्रत्येक माह की अन्तिम तिथि को ₹ 2000 वर्ष पर्यन्त आहरण करते हैं। आहरण पर 12% वार्षिक दर से ब्याज लगाया जाता है। (RBSE 2005)
Rashmi & Ashish are two partners of a firm. Rashmi withdraws ₹ 1000 at the beginning of each month. Whereas, Ashish withdraw ₹ 2000 at the end of each months during the whole year. Interest on drawing is charged @ 12% per annum calculate the amount of interest at the end of the year.

4. किसी साझेदार को लाभ की गारंटी से क्या तात्पर्य है ?
What is meant by Guarantee of profit to a Partner?

5. यदि **(i)** प्रत्येक महीने के पहले दिन **(ii)** प्रत्येक महीने के अंत में **(iii)** प्रत्येक महीने के मध्य में 6 महीने तक समान राशि निकाली जाए, तो आहरण पर ब्याज की गणना कितनी अवधि के लिए की जाएगी ?
For how much period, interest on drawings will be calculated if the equal amounts are drawn for 6 months ending on **(i)** Ist date of every month. **(ii)** end of every month. **(iii)** Middle of every month?

6. चन्द्र, सूर्य और किरण एक फर्म में साझेदार है। वर्ष 2016 के दौरान उनके आहरण निम्न प्रकार थे
Chandra, Surya and Kiran are partners in a firm, during the year 2016, their drawings were as follows -:

दिनांक (Date)	चन्द्र (Chandra) ₹	सूर्य (Surya) ₹	किरण (Kiran) ₹
01-02-16	1,000	-	2,000
01-05-16	3,000	4,000	1000
01-08-16	-	4,000	3,000
01-12-16	6,000	2,000	4,000

31 दिसम्बर, 2016 को समाप्त वर्ष के लिए आहरण पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज की गणना ''गुणनफल विधि'' से कीजिए।
Calculate the interest on drawings @6% p.a. for the year ending on 31st December, 2016 by 'Product Method'
(Ans:- Interest on Drawings ₹ 205; ₹ 270 and ₹ 245)

7. राम, रहीम और रोजा 3 : 2: 1 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हुये साझेदार है। साझेदारी संलेख के अनुसार रोजा का न्यनूतम लाभ ₹ 10,000 वार्षिक होगा। 31 मार्च 2017 को समाप्त हुए अर्द्ध–वर्ष का लाभ ₹ 24,000 था। लाभ–विभाजन हेतु आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए और लाभ एवं हानि नियोजन खाता बनाइये। (RBSE2001)
Ram, Rahim and Roja are partners sharing profit and loss in the ratio of 3 : 2: 1 As per partnership deed Roja's minimum profit will be ₹ 10,000 p.a. The profit for the half year ending on 31st March 2017 was ₹ 24,000. Pass necessary Journal entry for the distribution of the profit and prepare Profit and Loss Appropriation Account.
(Ans. N.P. Divided ₹ 11,400, ₹ 7,600 and ₹ 5,000).

8. X, Y तथा Z की पूँजी क्रमशः ₹ 40,000, ₹ 30,000 तथा ₹ 20,000 है। वर्ष 2016 के लिए उन्हें पूँजी राशियों पर 10% वार्षिक दर की जगह 12% वार्षिक दर से ब्याज दे दिया गया है। सुधार हेतु समायोजन प्रविष्टि दीजिए।
X, Y and Z have Capital of ₹ 40,000, ₹ 30,000 and ₹ 20,000. For the year 2016, Interest was credited to them @ 12% p.a. instead of @ 10% p.a. with what amount you will pass the adjustment entry. (Ans: - A's Capital A/c Dr. ₹ 200 ; C's capital A/c Cr ₹ 200)

9. X, Y और Z 5 :3:2 के अनुपात में लाभ हानि बाँटते हुए साझेदार है। Z फर्म को न्यूनतम ₹ 1,20,000 कमाने की गांरटी देता है। लेकिन Z फर्म के लिए केवल ₹ 80,000 ही अर्जित करता है। फर्म द्वारा कुल कमाया गया लाभ ₹ 2,00,000. साझे दारों में लाभ के बटवारे हेतु लाभ नियोजन खाता बनाइए।
X,Y and Z are partner,s sharing profit in ratio 5 :3:2 Z gives guarantee to firm of minimum ₹ 1,20,000 earnings but Z could earn only ?. 80,000 for the firm. Total profit earned by the firm is ₹ 2,00,000. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for distribution of profit among partners.
(Ans. Profit X ₹ 1,20,000, Y ₹ 72,000, Z ₹ 48,000)

10. P, Q और R 3:2:1. के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार है उनके बीच तय हुआ की 1- R को न्यूनतम ₹ 3,00,000 लाभ के हिस्से के रूप में दिया जायेगा 2- Q ने फर्म को गांरटी दी कि न्यूनतम ₹ 4,80,000 फर्म को कमा कर देगा। फर्म ने चालू वर्ष में ₹ 15,20,000. की आय अर्जित की। इसमें Q द्वारा फर्म को कमा कर दी गई राशि ₹ 3,20,000 शामिल है। साझेदारों मे लाभ के बंटवारे हेतु लाभ नियोजन खाता बनाइए।

P, Q and R are Partner, sharing profit in ratio 3 : 2 : 1 It was agreed that 1. R would get minimum profits ₹ 3,00,000 2. Q made guarantee to the firm that he would earn minimum ₹ 4,80,000 Firm earned ₹ 15,20,000 for the current year it included ₹ 3,20,000 earned by Q. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for distribution of profit among partners.(Ans. Profit P ₹. 8,28,000, Q ₹ 5,52,000, R ₹ 3,00,000)

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. साझेदारी की परिभाषा दीजिए एवं इसकी विशेषताएं बताइए।
Define partnership and discuss it's characterstics.

2. स्थिर तथा परिवर्तनशील पूँजी खातों से आप क्या समझते है? स्थिर तथा परिवर्तनशील पूँजी खातों का अन्तर स्पष्ट कीजिए। काल्पनिक अंकों के आधार पर साझियों के चालू खाते बनाइए।
What do you mean by fixed and fluctuating Capital Accounts? Point out the difference between the fixed and fluctuation Capital Accounts. Prepare partner's current account by using imaginary figures.

3. साझेदारी संलेख क्या है? लेखांकन की दृष्टि से इसमें किन–किन बातों का समावेश किया जाता है?
What is partnership deed? What points are included in it from accounting point of view?

4. साझेदारी के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।
Describe various types of partnership.

5. साझेदारों को लाभों का आश्वासन (गारन्टी) से आप क्या समझते है? इसके दो प्रकारों का वर्णन कीजिए।
What do you mean by gurantee of profit to a partner? Explain the two types of such guarantee.

6. साझेदारी खाते बन्द करने के बाद किसी भूल का पता चले तो उसका समायोजन आप कैसे करेंगे?
How would you adjust the omission disclosed after closing the partnership accounts?

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

Q.1	Q.2	Q.3	Q.4	Q.5	Q.6	Q.7	Q.8	Q.9	Q.10
B	B	A	D	D	D	B	B	B	A

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. राम, मोहन और सोहन एक फर्म में साझेदार थे। उनकी पूँजी 1 जनवरी, 2016 को क्रमशः ₹ 40,000, ₹ 60,000 और ₹ 1,00,000 थी। लाभ वितरण से पूर्व राम को ₹ 12,000. और मोहन को ₹ 18,000 प्रतिवर्ष वेतन लेने का अधिकार है। पूँजी पर 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज दिया जाता है। शुद्ध वितरण–योग्य लाभ में से प्रथम ₹ 40,000 पूँजी के अनुपात में व शेष लाभ बराबर–बराबर बाँटना है। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर 2016 को उपर्युक्त सभी समायोजन करने से पूर्व फर्म का लाभ ₹ 1,20,000. था। 31 दिसम्बर, 2016 को लाभ एवं हानि नियोजन खाता साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए तथा लाभ–वितरण को एक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

Ram, Mohan and Sohan were partners ?. Their capital on 1st january 2016 were ₹ 40,000, ₹ 60,000 and ₹ 1,00,000 respectively. Before division of profit, Ram is entitled for salary of ₹ 12,000 and Mohan ₹ 18,000 per annum. Interest is allowed on Capital @ 10% per annum. Out of net divisible profits, first ₹ 40,000 will be divided in their captial ratio and the balance of profits is to be divided equally. The profit of the firm for the year ending on 31st December, 2016 amounted to ₹ 1,20,000 before making all the above adjustments. Prepare Profit & Loss Appropriation A/c the partner's capital account on 31st December 2016 and Pass a Journal entry for distribution of profit.

Ans. (Profit divided Ram ₹ 18,000, Mohan ₹ 22,000 and Sohan ₹ 30,000 respectively).

2. राम, श्याम और मोहन साझेदार थे। उनकी पूँजी 1 जनवरी, 2016 को क्रमशः ₹ 50,000, ₹ 30,000 और ₹ 20,000 थी। लाभ वितरण से पूर्व, श्याम को ₹ 3,000. और मोहन को ₹ 2,000 . प्रतिवर्ष वेतन लेने का अधिकार है। पूँजी पर 10 प्रतिशत की दर से ब्याज दिया जाता है। शुद्ध वितरण–योग्य लाभ में से प्रथम ₹ 50,000 पूँजी के अनुपात में व शेष लाभ बराबर–बराबर बाँटना है। वर्ष के अन्त में 31दिसम्बर 2016 को उपर्युक्त सभी समायोजन करने से पूर्व फर्म का लाभ ₹ 95,000 था।
लाभ एवं हानि नियोजन खाता बनाइए, तथा जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Ram, Shyam and Mohan were partners, their capital on 1st January 2016 were ₹ 50,000, ₹ 30,000 and ₹ 20,000 respectively. Before division of profit, Shyam is entitled for salary of ₹ 3,000 and Mohan ₹ 2,000

per annum. Interest is allowed on Capital @ 10% per annum. Out of net divisible profits, first ₹ 50,000 will be divided in their captial ratio and the balance of profits is to be divided equally. The profit of the firm for the year ending on 31st December, 2016 amounted to ₹ 95,000 before making all the above adjustments. Prepare P & L appropriation A/c and give Journal entries.

(**Ans.** N.P. divided Ram ₹ 35,000, Shyam ₹ 25,000 and Mohan ₹ 20,000.)

3. ए,बी और सी साझेदार थे। उनकी पूँजी 1 जनवरी, 2016 को क्रमशः ₹ 40,000, ₹ 27,800 और ₹ 15,900 थी। लाभ वितरण से पूर्व, बी को ₹ 2,500 और सी को ₹ 2,000 प्रति वर्ष लेने का अधिकार है। पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज देना है। शुद्ध वितरण–योग्य लाभ में से पहले ₹ 10,000, में ए को 40 प्रतिशत, बी को 35 प्रतिशत और सी को 25 प्रतिशत मिलेगा। उससे अधिक लाभ बराबर–बराबर बाँटना है। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर 2016 को वेतन को डेबिट करने के बाद किन्तु ब्याज देने से पूर्व लाभ ₹ 23,170. था। लाभ–हानि विभाजन खाता तैयार कीजिए।

A, B and C were partners, Their capital as on 1st january 2016 was ₹ 40,000, ₹ 27,800 and ₹ 15,900 respectively. Before division of profit, B is entitled for salary of ₹ 2,500 and C for ₹ 2,000 per annum. Interest is allowed on Capital @ 5% per annum. Out of net divisible profits, first ₹ 10,000, A will receive 40%, B-35% and C-25%. Profits in excesses to that are shared equally. For the year ending on 31st December, 2016 after debiting salary but before charging interest the profits were ₹ 23,170. Prepare Profit & Loss Appropriation A/c. (**Ans.** N.P. divided A ₹ 6,995, B ₹ 6,495 and C ₹ 5,495.)

4. 'पी' और 'एस' ने 1 जनवरी 2016 को क्रमशः ₹ 1,000, ₹ 10,000 की पूँजी के साथ साझेदारी फर्म शुरू की। 1 मार्च, 2016 को 'पी' ने ₹ 4,000 की अतिरिक्त पूँजी लगायी। उस दिन 'एस' ने अपनी पूँजी से ₹ 3,000 निकाले। 'सी' ने 1 जुलाई, 2016 को ₹ 15,000 की पूँजी के साथ फर्म में प्रवेश किया। उस दिन 'पी' और 'एस' क्रमशः ₹ 6,000 और ₹ 5,000. की अतिरिक्त पूँजी लगायी। लाभ–हानि पूँजी अनुपात में विभाजित किये जाते है। वर्ष 2016 के लाभ ₹ 29,800 थे। पूरी गणना देते हुए लाभ एवं हानि विनियोजन (विभाजन) खाता बनाइए।

P and S started a partnership firm on 1st January 2016 with a capital of ₹ 10,000 respectively. On 1st March, 2016 P introduced additional capital of ₹ 4,000. On that day S withdrew ₹ 3,000 from his capital. C entered in the firm on 1st July 2016 with a capital of ₹ 15,000. On that day P and S introduced additional capital of ₹ 6,000 and ₹ 5,000 respectively. Profit-Loss are distributed in capital ratio. The profits for the year 2016 were ₹ 29,800. Prepare Profit & Loss Appropriation A/c by giving detailed calculations.

(**Ans**.Capital Ratio- 44 : 60 : 45, N.P. divided P ₹ 8,800, S ₹ 12,000 and C ₹ 9,000).

5. अ और ब 7 : 3 के अनुपात में लाभ बाटँते हुए साझेदार है। 1 अप्रैल 2016 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000 और ₹ 40,000 थी। पूँजी एवं आहरण पर 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज लगाया जाना था। ब को ₹ 1,000 प्रति माह वेतन दिया जाता है। प्रत्येक माह की प्रथम तारीख को अ ने ₹ 1,000 प्रति माह एवं ब ने ₹ 600 प्रति माह आहरण किया। पूँजी एवं आहरण पर ब्याज लगाने से पूर्व, परन्तु ब का वेतन घटाने के बाद, वर्ष का लाभ ₹ 54,960 था। शुद्ध लाभ (ऐसा कमीशन घटाने के बाद) पर 5 प्रतिशत की दर से अ को कमीशन का प्रावधान करना है। उपर्युक्त सूचनाओं से 31 मार्च, 2017 का लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए।

A and B are partners sharing profits in the ratio of 7 : 3. On 1st April 2016, their capitals were ₹ 1,00,000, ₹ 40,000 respectively. Interest is to be charged on capital and drawings at 10% per annum. B is to be allowed salary ₹ 1,000 per month. A and B withdrew ₹ 1,000 and ₹ 600 per month respectively on the first day of every month. The profits for the year, prior to calculation of interest on capitals and drawings, but after charging B's salary, amounted to ₹ 54,960. A provision for A commission at 5% on net profit (after charging such commission) is to be made. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for the year ending 31st March 2017. (**Ans.:** Interest on Drawings ₹ 650 and ₹ 390, N.P. A ₹ 28000, B ₹ 12000 and A's Commission ₹ 2000)

6- X और Y साझेदार है व लाभों को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते है। 1 अप्रैल 2016 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 3,00,000 व ₹ 2,00,000 है। साझेदारी संलेख में पूँजी पर 10% वार्षिक ब्याज और Y को ₹ 1,250 प्रतिमाह वेतन का प्रावधान है। 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, पूँजी पर ब्याज और वेतन का प्रावधान करने से पहले, ₹ 40,000 का लाभ है। वर्ष के लिए लाभों का विभाजन दिखाइए।

X and Y are partners sharing profits in the ratio of 3 : 2. On 01st April 2016 their capital is respectively ₹ 3,00,000 and ₹ 2,00,000 respectively. The partnership deed provided interest on capital @10% p.a. and salary to Y as ₹ 1,250 p.m. the net profit before providing interest on capital and salary amounts to ₹ 40,000 for the year ended 31st March, 2017. Show the distribution of profit for the year.

(**Ans.:** X Interest on Capital ₹ 15,000, Y Interest on Capital ₹ 10,000, Y's Salary ₹ 15,000)

7. रूचि व प्रशान्त साझेदार है और लाभ हानि को 3 : 1 के अनुपात में बॉटते है । 1 अप्रैल, 2016 को उनकी पूँजियॉ क्रमशः ₹ 50,000 तथा ₹ 40,000 है। 31 मार्च 2017 को समाप्त हुए वर्ष के दौरान निम्नलिखित पर ध्यान देने के पूर्व फर्म का लाभ ₹ 57,500 था।

1. पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जाना है। **2.** रूचि बिक्री पर 2 प्रतिशत कमीशन प्राप्त करेगी। वर्ष की बिक्री ₹ 1,25,000 थी। 3. प्रशान्त को प्रति माह ₹ 250. वेतन प्राप्त होगा। **4.** प्रशान्त उसके भवन का फर्म द्वारा प्रयोग किये जाने के लिए ₹ 625 प्रतिमाह किराया पाने का अधिकारी है। **5.** विभाजन योग्य लाभ का 10 प्रतिशत सामान्य संचय खाता में अन्तरित किया जाना है। आपको लाभ–हानि विनियोजन खाता तैयार करना है।

Ruchi and Prashant are partners sharing profits and losses in the ratio of 3:1. On 1st April 2016 their capitals were ₹ 50000, and ₹ 40,000 respectively . During the year ended 31st March 2017 The profit of the firm amounted to ? ₹ 57,500 before taking into consideration the following :

1- Interest on capital is to be allowed @ 5 % p.a. 2- Ruchi will get commission of 2% on sales. Sales for the year were ₹ 1,25,000 3- Prashant will get a salary of ₹ 250 p.m. 4- Prashant is entitled to a rent of ₹ 625 per month for the use of his premises by the firm 5-10% of the divisible profit is to be transferred to General Reserve. You are required to prepare the Profit and Loss Appropriation Account.

उत्तर: Profit Before P&L Appropriation ₹ 50,000, Profit Ruchi ₹ 27,000, Prashant ₹ 9000)

8. ए., बी. व सी. 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार है। ए ने प्रत्येक माह के प्रारम्भ में ₹ 2,000, बी ने ₹ 1,000 प्रत्येक माह के मध्य में तथा सी ने ₹ 1,000 प्रत्येक माह के अन्त में आहरण किये। पूँजी व आहरण पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज चार्ज किया जाता है। सी को ₹ 800 प्रति माह वेतन स्वीकृत किया गया है । वेतन घटाने के बाद किन्तु सभी तरह का ब्याज चार्ज करने से पूर्व 31 दिसम्बर, 2016 को लाभ ₹ 1,22,150 था लाभ हानि नियोजन खाता, साझेदारों के पूँजी व चालू खाते निम्नाकिंत अतिरिक्त सूचनाओं के आधार पर बनाइए :

	ए ₹	बी ₹	सी ₹
पूँजी 1 जनवरी 2016 को	2,00,000	1,50,000	1,00,000
अतिरिक्त पूँजी 1 अप्रेल, 2016 को लगाई गई	50,000	30,000	–
1 अक्टूबर, 2016 को पूँजी निकाली	–	–	20,000
चालू खाते का शेष 1 जनवरी, 2016 को	12,200(जमा)	5,500(जमा)	4,100(नाम)
ऋण खाते का शेष 1 जनवरी 2016 को	40,000		

A, B and C are partners sharing profit & loss in 3 : 2 : 1 ratio. , A withdraws ₹ 2,000 at the beginning of every month, B withdraws ₹ 1,500 in the middle of every month, whereas, C withdraws ₹ 1,000 at the end of every month. Interest on Capitals and drawings is to be charged @ 10% p.a.. C is also to be allowed a salary of ₹ 800 per month. After deducting salary but before allowing all types of interest, the profit for the year ending 31st December 2016 was ₹ 1,22,150. Prepare Profit and Loss Account and Capital Accounts and Current Accounts of the partners from the additional informations given below.

	A ₹	B ₹	C ₹
Capital as on 1st Jan., 2016	2,00,000	1,50,000	1,00,000
Additional Capital introduced on 1st April 2016	50,000	30,000	-
Withdraw on 1st Oct., 2016	-	-	20,000
Current Account on 1st Jan. 2016	12,200	5,500	4,100 (Dr.)
Loan Accounts on 1st Jan. 2016	40,000	-	-

(**उत्तर:** Profit before P&L Appropriation ₹ 1,19,750, Profit A ₹ 36,000 , B ₹ 24,000, C ₹12,000, Current A/c Balance A ₹ 46,650, B ₹ 27,850, C ₹ 14,450)

9. मनीष, नवन, तथा वैभव एक फर्म के साझेदार है। 1 अप्रैल 2016 को उनके पूँजी खातों के शेष क्रमशः ₹ 4,00,000, ₹ 3,00,000 तथा ₹ 2,00,000 थे। साझेदारी संलेख में यह व्यवस्था है –

अ) वैभव को ₹ 40,000. वेतन से प्रति वर्ष जमा किया जाएगा ।

ब) वैभव को वेतन, सभी साझेदारों को पूँजी पर 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज तथा इस पैराग्राफ ''ब'' में वर्णित अतिरिक्त पारिश्रमिक का प्रावधान करने के बाद वैभव ₹ 35,000 वार्षिक से अधिक समस्त लाभ पर 10 प्रतिशत का अधिकारी होगा ।

स) 'अ' ,'ब' एवं 'स' में वर्णित समस्त राशियों को चार्ज करने के बाद बचे हुए लाभ का 1/3 भाग नवन को मिलेगा ।

द) शेष लाभों को मनीष तथा वैभव में 4 :1 के अनुपात में बांटा जायेगा ।

31 मार्च 2017 को समाप्त हुये वर्ष के लिए (उपरोक्त का प्रावधान करने से पूर्व) लाभ ₹ 3,30,000 था। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आपको लाभ–हानि नियोजन खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते बनाने है । वर्ष भर में मनीष, नवन तथा वैभव के व्यक्तिगत उपयोग के लिए क्रमशः ₹ 20,000, ₹ 15,000, तथा ₹ 10,000 का आहरण किया है।

Manish, Navan and Vaibhav are partners in a firm, balance of their capital accounts as on 1st Aapril, 2016 were : ₹ 4,00,000, ₹ 3,00,000 and ₹ 2,00,000 respectively. The partnership agreement provides

A.Vaibhav shall be credited for ₹ 40,000 of salary per annum.

B. After providing Vaibhav salary, 10% p.a. interest on capital to all partners and extra remuneration to Vaibhav as provided in this paragraph 'B' Vaibhav shall be entitled to 10% of all profits in excess of ₹ 35,000 p.a.. **C.** Navan is to have one third of the profits after charging all amount under 'A', 'B', 'C', **D** .The Balance is to be divided between Manish and Vaibhav in the ratio 4 : 1. The profits for the year ended 31st March, 2017 (before making any provision for the above) was ₹ 3,30,000. You have to prepare Profit & Loss Appropriation account and partners, Capital Accounts for the year ending 31st March, 2017. During the year Manish, Navan and Vaibhav withdrew the amount for personal use ₹ 20,000, ₹ 15,000 & ₹ 10,000 respectively.

(**उत्तर:** Vaibhav Remuneration ₹ 15,000, Profit Navan ₹. 46,250, Manish ₹ 1,11,000, Vaibhav ₹ 27,750, Capital Balance Manish ₹ 4,66,250, Navans ₹ 4,26,000, Vaibhav ₹ 2,92,750)

10. अ, ब और स एक फर्म में बराबर के साझेदार है। 1 जनवरी, 2016 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 50,000, ₹ 40,000 तथा ₹ 30,000 थी । वर्ष 2016 के खाते बन्द करने के बाद यह पता चला कि साझेदारी समझौते के अनुसार साझेदारों की पूँजी पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज, अ को ₹ 30,000 वार्षिक वेतन तथा स को ₹ 6,000 कमीशन का प्रावधान लाभ बॉटने से पूर्व नहीं किया गया है। साझेदारों में यह समझौता हुआ कि चिट्ठे को बदलने के बजाय अगले वर्ष के प्रारम्भ में समायोजन प्रविष्टि कर दी जाये।

यह मानते हुए कि पूँजी स्थिर है, समायोजन हेतु किया दिखाते हुए, फर्म की पुस्तकों में एक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

A, B and C are equal partners in a firm. Their capitals on 1st January 2016 were ₹ 50,000, ₹ 40,000 and ₹ 30,000 respectively. After closing the accounts of the year 2016, it was found that according to the partnership agreement interest at 10% per annum on partners capitals, a salary of ₹ 3,000 per year to A and a commission of ₹ 6,000 to C were not provided before distribution of profits. It was agreed among the partners to make the adjustment entry at the beginning of the next year rather than to alter the Balance Sheet. Pass one Jounal entry in the books of the firm showing the working of Adjustments assuming that capitals are fixed.

(उत्तर: 'B' Dr. ₹ 3,000, 'A' Cr. ₹ 1,000, 'C' Cr. ₹ 2,000)

11. एक्स, वाई, जेड 2 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ– हानि बॉटते हुये साझेदार है। 31मार्च 2017 को ₹ 30,000 रू. का लाभ बांटने एवं आहरणों का लेखा करने के बाद उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 60,000, ₹ 45,000 व ₹ 30,000 है । बाद में ज्ञात हुआ कि पूँजी पर 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज आहरणों पर ब्याज लगाना भूल गये । आहरण इस प्रकार थे – एक्स के ₹ 6000., वाई के ₹ 4500 तथा जेड के ₹ 3600 जिन पर ब्याज क्रमशः ₹ 120., ₹ 90. तथा ₹ 45 होता है उपरोक्त भूलों को सुधारने हेतु 1 अप्रैल 2017 को आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए एवं साझेदारों के समायोजित पूँजी खाते बनाइये।

X, Y, and Z are partners in a firm sharing profit & loss in the ratio of 2 : 2: 1. On 31st March, 2006 after recording Drawings and distribution of profits ₹ 30,000, their capitals were ₹ 60,000, ₹ 45,000, and ₹ 30,000 respecively. After this it was found that 5% Interest on capital and Interest on Drawings was omitted to be recorded. Drawing were as follows X- ₹ 6,000, Y- ₹ 4,500, and Z- ₹ 3,600. Interest on which is to be charged ₹ 120, ₹ 90 and ₹ 45 respectively. Pass necessary Journal entries for the above ommissions and prepare adjusted partners capital accounts.

उत्तर : Opening Capital X ₹ 54,000, Y ₹ 37,500 and Z ₹ 27,600, Loss X ₹ 2,280, Y ₹ 2,280, Z ₹ 1,140 Capital Balance X ₹ 60,300, Y ₹ 44,505, Z ₹ 30,195)

12. पी, क्यू तथा आर एक फर्म में साझेदार है। 31 मार्च 2017 को उनके पूँजी खाते क्रमशः ₹ 90,000, ₹ 45,000, ₹ 45,000 थे। साझेदारी संलेख की व्यवस्थानुसार : **1.** आर को ₹ 9,000 प्रति वर्ष पारिश्रमिक दिया जाना था **2.** पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जाना था **3.** लाभों को 2 :2:1 के अनुपात में बॉटा जाना था। उपर्युक्त मदों पर ध्यान न देते हुए, 31.3.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ₹ 54,000 के शुद्ध लाभ को तीनों साझेदारों में समान रूप से बॉट दिया गया। अशुद्धि के सुधार हेतु एक समायोजन प्रविष्टि कीजिए, कार्यशील टिप्पणी दर्शायें।

P, Q and R partners in a firm. Their capital accounts stood at ₹ 90,000, ₹ 45,000 and ₹ 45,000 respectively on 31st March, 2017. 1- R was to be allowed a remuneration of ₹ 9000 p.a.. 2- Interest at 5% p.a. was to be provided on capitals 3- Profits were to be divided in the ratio of 2 : 2 : 1. Ignoring the above items, net profit of ₹ 54000 for the year ended 31.03.2017, It was divided among the three partners equally. Make journal entry for rectification & show workings.

(**उत्तर** : Opening Capital P ₹ 72000, Q ₹ 27000, R ₹ 27000, Q Dr. ₹ 1170, P Cr ₹ 1080, R Cr. ₹ 90)

13. सतीश, नितिन तथा अजय स्थिर पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000, ₹ 75,000 तथा ₹ 75,000 के साथ साझेदार है। उनके चालू खाते का शेष था सतीश – ₹ 5,000 (क्रेडिट), नितिन – ₹ 4,000 (क्रेडिट), तथा अजय – ₹ 2,500 (डेबिट)। साझेदारी संलेख में निम्नवत व्यवस्था थी।

1. पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज। 2. नितिन अपने भवन को फर्म को देने के लिए ₹ 500 प्रति माह किराया पाने का अधिकारी है। 3. अजय ₹ 1,000 प्रति माह वेतन पाने के अधिकारी है।
फर्म के लाभों का वितरण निम्न प्रकार किया जाना था।
अ. प्रथम ₹ 20,000 उनकी पूँजी के अनुपात में, **ब.** अगले ₹ 20,000 2:2:1 के अनुपात में, **स.** शेष लाभों का विभाजन बराबर–बराबर, उपर्युक्त समायोजन से पूर्व वर्ष का लाभ ₹ 85,500 था। लाभ–हानि विनियोजन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व चालू खाते बनाइए।

Satish, Nitin and Ajay are partners with a fixed capital ₹ 1,00,000, ₹ 75,000, and ₹ 75,000 respectively. Their current account balances were Satish ₹ 5,000 (Cr.), Nitin ₹ 4,000 (Cr.), and Ajay ₹ 2,500 (Dr.). The partnership deed provided as under :
1. Interest on capital @ 5% p.a. **2.** Nitin was entitled for rent @ ₹ 500 p.m. for providing his premises to the firm. **3.** Ajay was entitled to a salary of ₹ 1,000 p.m. The profits of the firm were to be distributed as follows:
A-The first ₹ 20,000 in proportion to their capitals. **B**-Next ₹ 20,000 in the ratio 2:2:1. **C**- Remaining profits to be shared equally. The net profit before the above adjustments for the year was ₹ 85,500. Prepare profit & Loss Appropriation Account, Capital Account and Current Accounts of the partners.
(**उत्तर:** Profit before P& L Appropritation ₹ 79,500, Profit Satish ₹ 21,000, Nititn ₹ 19,000, Ajay ₹ 15,000, Current Account Balance Satish ₹ 31,000, Nitin ₹ 32,750, Ajay ₹ 28,250)

14. एक्स, वाई व जेड एक फर्म में साझेदार है । उनके लाभ विभाजन का अनुपात 5 : 3: 2 था । जेड का प्रत्येक वर्ष लाभ में हिस्से के रूप में न्यूनतम राशि ₹ 10,000 की गारण्टी दी जाती है । कोई भी कमी होने पर इसकी भरपाई वाई के द्वारा की जायेगी। 31 दिसम्बर, 2015 तथा 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ क्रमशः ₹ 40,000 तथा ₹ 60,000 था।
दो वर्षो के लिए लाभ हानि नियोजन खाता बनाइए ।

X, Y and Z are partners in a firm. Their profit sharing ratio is 5 : 3: 2. However, Z is guaranteed a minimum amount of ₹ 10,000 as share of profit every year. Any deficiency arising on that account shall be met by Y. The profit for the two year ending 31st December, 2015 and 2016 were ₹ 40,000 and ₹ 60,000 respectively. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for the two years. Share of Profit 2015 - X ₹ 20,000 , Y ₹ 10,000, Z ₹ 10,000 ; 2016 -X ₹ 30,000, Y ₹ 18,000, Z ₹ 12,000